ISSN 2349-6614

अक्टूबर 2020

मूल्य 50 रु

प्रत्यूष

हिन्दी मासिक पत्रिका

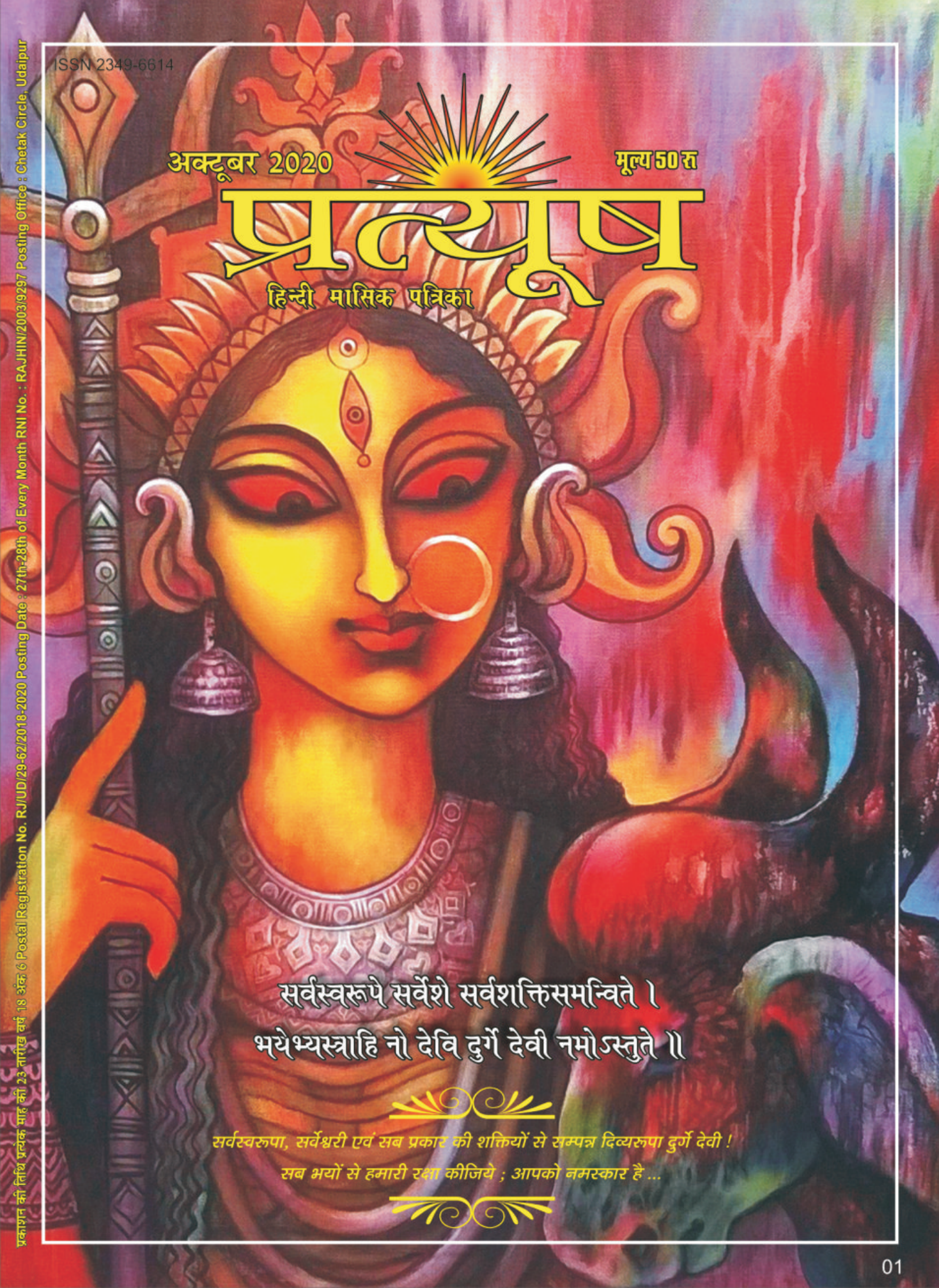

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवी नमोऽस्तुते ॥

सर्वस्वरूपा, सर्वेश्वरी एवं सब प्रकार की शक्तियों से सम्पन्न दिव्यरूपा दुर्गे देवी !
सब भयों से हमारी रक्षा कीजिये ; आपको नमस्कार है ...

प्रकाशन की तिथि प्रत्येक माह की 23 तारीख वर्ष 18 अंक 6 Postal Registration No. RJ/UD/29-62/2018-2020 Posting Date : 27th-28th of Every Month RNI No. : RAJHIN/2003/9297 Posting Office : Chetak Circle, Udaipur

Commerce House, Town Hall Road, Udaipur City, Udaipur-Rajasthan – 313001

+919672978090,+919672978096

Honda is HONDA

'प्रत्यूष' के प्रेरणा स्रोत मात श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा एवं
तात श्री आनन्दी लाल जी शर्मा
प्रत्यूष परिवार का शत्-शत् नमन चरणों में पुष्प समर्पण

पाठकों व विज्ञापनदाताओं को नवरात्रि पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं

अक्टूबर 2020
वर्ष 18, अंक 6

प्रत्यूष

मूल्य 50 रू.
वार्षिक 600 रू.

अन्दर के पृष्ठों पर...

नीर-क्षीर
07 लक्ष्मी विलास पैलेस कुर्क

पर्यटन
22 फूलों की वादियों में महकता कुल्लू

केयर
37 मॉनसून के बाद संक्रमण से रहें सावधान

परम्परा
32 टोरजा हर साल संवरती है मृत देह

प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी

सम्पादक रेणु शर्मा

प्रबन्ध सम्पादक नीरज शर्मा, डॉ. वीणा शर्मा

विपणन प्रबन्धक नितेश कुमार, नन्द किशोर
मदन, भूमिका, उषा
चन्द्रप्रभा, संगीता

टाइप सेटिंग जगदीश सालवी

कम्प्यूटर ग्राफिक्स Supreme Designs
विकास सुहालका

सलाहकार मण्डल
गोपाल शर्मा (गोपजी), वैभव गहलोत
पवन खेड़ा, नीरज डांगी, कुलदीप इन्दौरा
कृष्ण कुमार हरितवाल, धीरज गुर्जर, अभय जैन
गजेन्द्र सिंह शक्तावत, लाल सिंह झाला
ओम शर्मा, अजय गुर्जर, आदित्य नाग
हेमन्त भागवानी, डॉ. राव कल्याण सिंह
अशोक तम्बोली, सुन्दरदेवी सालवी

छायाकार :
कमल कुमावत, जितेन्द्र कुमावत,
ललित कुमावत

चीफ रिपोर्टर : उमेश शर्मा

जिला संवाददाता
बांसवाड़ा - अनुराग चेलावत
चित्तौड़गढ़ - संदीप शर्मा
नाथद्वारा - लोकेश दवे
डूंगरपुर - सारिका राव
राजसमंद - कोमल पालीवाल
जयपुर - राव संजय सिंह
मोहसिन खान

प्रत्यूष में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे संस्थापक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।

प्रत्यूष
हिन्दी मासिक पत्रिका
प्रकाशक-संस्थापक :
Pankaj Kumar Sharrma
"रक्षाबंधन", धानमण्डी, उदयपुर-313 001

कार्यालय पता : 2, 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर (राज)
दूरभाष एवं फैक्सः 0294-2427703 वाट्सएप 9414077697
मोबाइल : 94141-57703(विज्ञापन), वाट्सएप 75979-11992(समाचार-आलेख), 98290-42499(वाट्सएप), 94141-66737
Email:pankajkumarsharma2013@gmail.com, Visit us at: www.pratyushpatrika.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, संस्थापक, स्वामी पंकज शर्मा की ओर से मुद्रक आशीष बापना द्वारा मैसर्स पायोराइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. एम.आई.ए., उदयपुर से मुद्रित तथा 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी उदयपुर से प्रकाशित।

K.S. Micro-chem Pvt. Ltd.
Minerals & Chemicals
Polytube Pvt. Ltd.

Dhirendra Singh Sachan
(Managing Director)
State Co-Convener Industrial Cell
B.J.P. Rajasthan

Manufacturers of :

Grounded Calcium Carbonate
Superfiller Powder ISI
Saaras® Rigid UPVC Pipe
(AS ISO 9001:2000 Company)

ISO 9001:2000 Reg. No.: RQ91:2091

Rohan Singh Sachan
(Associate Director)

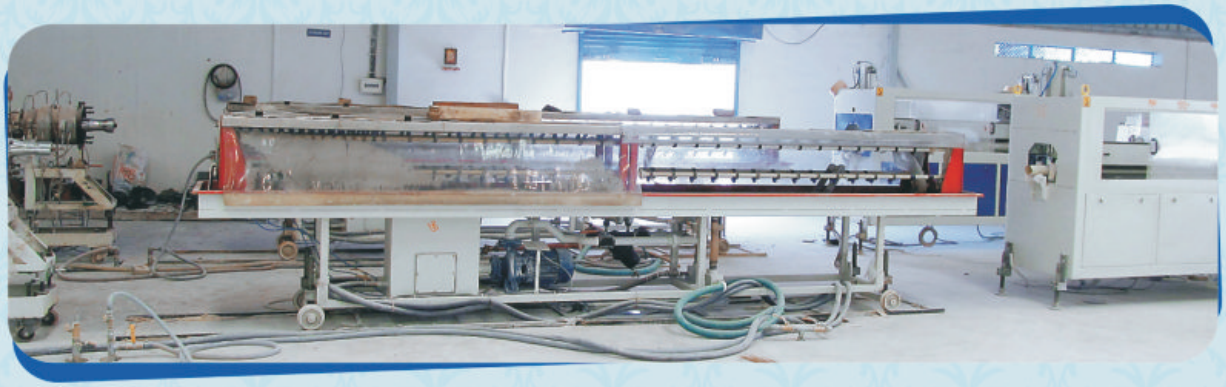

Head Office : 1/9, First Floor, Pratap Nagar, K.Vidyalaya Marg, Udaipur
Kanpur Office : 1346, Block-W-2, Damodar Marg, Kanpur (U.P.)
Jaipur Office : 1265, Rani Sati Nagar (Nirman Nagar)
Kolkata Office : 70-C, S.N. Chattergee Road, Behla Kolkatta (W.B.)
Udaipur Factory : F-269, RIICO Industrial Area, Gudli, Udaipur (Raj.)
Dausa Factory : F-90, RIICO Bapi Dausa (Raj.)
Jaipur Factory RIICO Industrial Area, Bassi, Jaipur (Raj.)

Ph.: 0294-2493006, 2490850
Mo.: 09414166598, 09352505700
Email.: info@ksmicrochempvt.com
info@kspolytube.com
dhirendar.singh3999@gmailcom
Web.: www.ksmicrochem.com
www.kspolytube.com

खुराफ़ाती चीन का मुकम्मल इलाज ज़रूरी

पूर्वी लद्दाख में भारत-चीन सीमा पर पिछले चार महीने से जारी गतिरोध को खत्म करने के लिए 10 सितम्बर को मास्को में दोनों देशों के विदेश मंत्रियों के बीच जो सहमति बनी है उसका औचित्य तभी है जब चीन उस पर ईमानदारी से अमल करें, लेकिन चीन एक ऐसा देश है जिस पर भरोसा नहीं किया जा सकता। मास्को में शंघाई सहयोग संगठन की बैठक से इतर भारत के विदेश मंत्री एस. जयशंकर और चीनी विदेश मंत्री वांग ची की ढाई घंटे से ज्यादा समय तक बातचीत चली और उसमें पांच सूत्रीय सहमति बनी। सहमति की योजना देखने में शांति बहाली की दिशा में महत्वपूर्ण पहल है। चीन दोहरी नीति पर चल रहा है। एक तरफ शांति की बातें कर रहा है, वार्ताओं को जारी रखने की जरूरत समझ रहा है, दूसरी तरफ उकसावे की गतिविधियों को अंजाम भी दे रहा है।

पैंगोंग इलाके में भारत एवं चीन में जारी टकराव के बीच भारतीय सेना ने रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण पहाड़ियों एवं क्षेत्रों पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराने की प्रक्रिया तेज कर दी है। इसके पीछे असल मकसद चीन को इन ऊंची पहाड़ियों पर काबिज होने से रोकना है। सेना को आशंका है कि हाल में उसने जिस प्रकार से उत्तरी पैंगोंग की पहाड़ियों में मोर्चाबंदी की है, वैसे ही कोशिश चीन अन्य चोटियों पर भी कर सकता है। ऐसा एक प्रयास वह सितम्बर के प्रथम सप्ताह में कर भी चुका है। पैंगोंग झील क्षेत्र से चीन के पीछे नहीं हटने के बाद सेना ने अपने रुख को आक्रामक बनाया है। अब वह चीन को उसी की भाषा में जवाब देने को तैयार है। दोनों देशों की सेनाओं के बीच ब्रिगेडियर स्तर की बातचीत में हालांकि, कई मुद्दों पर चर्चा हुई और सहमति भी व्यक्त की गई, लेकिन इसका जमीन पर कोई असर नहीं हुआ।

छल-कपट और अप्रत्याशित हमले चीन की रणनीति का अभिन्न हिस्सा है। लद्दाख में उसका दुस्साहस चीनी राष्ट्रपति शी चिनफिंग के भारत में दिए गए इस बयान के छह महीने बाद ही देखने को मिला, जिसमें शी ने कहा था कि भारत और चीन के रिश्ते एक नए दौर में दाखिल हो गए हैं। शी ने भारत पर तब प्रहार किया जब उसका ध्यान चीन से उपजे कोरोना वायरस से निपटने में दुनिया के सबसे सख्त लॉकडाउन को लागू करने में लगा हुआ था। चीन ने लद्दाख के उन इलाकों में घुसपैठ की जो वास्तव में उसकी कृत्रिम रूप से खींची गई सीमा से भी बहुत दूर हैं। इसने शी के नेतृत्व में चीन की जमीन कब्जाने की भूख को ही रेखांकित किया है।

मिसाल के तौर पर इसी साल जुलाई से बीजिंग ने भूटान के पूर्वी हिस्से पर दावा करना शुरू कर दिया, जिसकी सीमा केवल अरूणाचल से मिलती है। इस नए दावे के साथ ही चीन ने अरूणाचल और भूटान के खिलाफ एक नई मुहिम छेड़ दी है। चीन के सरकारी मीडिया ने अचानक ही यह भी खोज निकाला कि ताजिकिस्तान में पामीर का पठार ऐतिहासिक रूप से चीन का हिस्सा है। इससे पहले मई में उसने नेपाली संप्रभुता की प्रतीक और दुनिया की सबसे ऊंची पर्वत चोटी माउंट एवरेस्ट पर भी दावा ठोका था। पिछले महीने ही चीनी सरकारी जहाज जापान के दक्षिणतम बिन्दु ओकिनोतोरी द्वीप के विशेष आर्थिक क्षेत्र यानी ईईजेड में सामुद्रिक शोध गतिविधियां करता पाया गया। जब टोक्यो ने इसका विरोध किया तो बीजिंग ने कहा कि इस ईईजेड पर जापान के इकलौते दावे का कोई कानूनी आधार नहीं है, क्योंकि ओकिनोतोरी द्वीप नहीं, बल्कि चट्टानों का समूह है।

किसी देश की जमीन हथियाना और दावा करना कि वह प्राचीनकाल से चीन का हिस्सा है, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की पुरानी तिकड़म है। इसी कड़ी में उसने गलवन घाटी पर दावा किया है। चूंकि चीन 1951 में तिब्बत पर कब्जा करके ही भारत का पड़ोसी बना इसलिए भारत, नेपाल, भूटान और म्यांमार के साथ चीन की सीमा भी लग गई। असल में शी वहां से शुरूआत करना चाहते हैं जहां से माओ ने काम अधूरा छोड़ा था। माओ तिब्बत को चीन की हथेली के साथ ही नेपाल, भूटान के अलावा लद्दाख, सिक्किम और अरूणाचल जैसे तीन भारतीय इलाकों को उसकी पांच अंगुलियां मानते थे और यह कहते थे कि चीन को उन्हें भी मुक्त कराना है। इस प्रकार देखें तो शी माओ के विस्तारवाद से जुड़े अधूरे एजेंडे को पूरा करने में ही जुटे हैं।

चीन को जवाब देने के लिए सैन्य मोर्चे पर हमारी चौकस तैयारी समय की मांग है। भारत ने अपनी सेनाओं के लिए राफेल समेत अन्य लड़ाकू विमान और हथियार एवं उपकरण जुटाने की तैयारी तेज कर दी है। चीन को यह अहसास होना चाहिए कि यह 1962 वाला भारत नहीं है। उसे यह संदेश देना जरूरी है कि अगर उसने भारत की जमीन हथियाने की कोशिश की तो उसे उसकी ऐसी कीमत चुकानी पड़ेगी कि पीढ़ियां भी नहीं भूल पाएंगी। उसे पता चलना चाहिए कि कायरों की तरह हमला कर उसने केवल भारी भूल ही नहीं की, बल्कि मुसीबत मोल लेने का भी काम किया है। आवश्यक केवल यह नहीं है कि वास्तविक नियंत्रण रेखा पर चीनी सेना की अतिक्रमणकारी हरकतों का मुंहतोड़ जवाब देने की हरसंभव तैयारी की जाए, बल्कि यह भी है कि आर्थिक एवं कूटनीतिक स्तर पर भी उसके खिलाफ और भी कदम उठाए जाएं। यह समय की मांग थी कि भारत विश्व स्वास्थ्य संगठन के मंच से यह कहता रहा है कि कोरोना वायरस के फैलने के कारणों की तह तक जाया जाए। चीन को बच निकलने का कोई मौका नहीं दिया जाना चाहिए। भारत को तिब्बत, ताइवान और हांगकांग के सवालों पर भी चीन को घेरना चाहिए।

Wish You a Happy Navratri

Universal
Power Industries

Engineers & Manufacturer :

✦ Monoblock Pump ✦ Power Factor Correction ✦ AMF Panel ✦ Synchronizing of DG ✦ Switch Gear LT/HT ✦ Power Control Panel ✦ Motor Control Panel ✦ Stone Process Machine Panel ✦ Automation Panel ✦ Automatic Power Factor Panel

1, SPL. Com, Industrial Estate, Pratap Nagar, Udaipur-313 001
Ph. : 0294-2490230 (W) 2490373 (R)

Telemecanique
Square D
Merlin Gerin

लक्ष्मी विलास पैलेस कुर्क

- विनिवेश में सीबीआई कोर्ट ने माना, हुआ भ्रष्टाचार
- तत्कालीन केन्द्रीय मंत्री व सचिव सहित पांच गिरफ्तारी वारंट से तलब
- उदयपुर के जिला प्रशासन ने होटल को लिया कब्जे में

✍ उमेश शर्मा

विश्व प्रसिद्ध झीलों की नगरी उदयपुर(राजस्थान) की फाइव स्टार होटल लक्ष्मी विलास पैलेस को वर्ष 2002 में औने-पौने दाम पर बेच कर सरकार को करोड़ों रुपए का नुकसान पहुंचाने के मामले में जोधपुर की सीबीआई मामलात की विशेष कोर्ट ने प्रसंज्ञान लेते हुए राज्य सरकार को इस बेशकीमती इमारत को अपने कब्जे में लेने के आदेश दिए हैं। न्यायाधीश पूरण कुमार शर्मा ने इस प्रकरण में पद का दुरूपयोग करने वाले तत्कालीन केन्द्रीय विनिवेशन मंत्री अरूण शौरी, तत्कालीन विभागीय सचिव सहित अन्य पांच सम्बन्धित लोगों को कोर्ट में गिरफ्तारी वारंट से तलब किया है।

सीबीआई कोर्ट के फैसले के बाद 16 सितम्बर को उदयपुर जिला कलेक्टर ने होटल को कब्जे में लेकर राजस्थान प्रशासनिक सेवा के अधिकारी शैलेष सुराणा को रिसीवर नियुक्त किया। जिनकी देखरेख में एक टीम ने बाद में होटल की कुलिया सम्पत्ति को सूचीबद्ध कर कोर्ट को निर्देशानुसार रिपोर्ट दी। होटल में पर्यटकों की बुकिंग व अन्य सारी व्यवस्थाएं भी आगामी आदेश तक जिला कलेक्टर की देखरेख में होंगी। जिला प्रशासन ने इस सम्बंध में भारतीय पर्यटन विकास निगम को भी सूचित कर दिया है, जिसकी मार्फत होटल के दैनन्दिन कार्य व रखरखाव का काम होगा। सम्पत्ति का 11 इंजीनियर, दो आरओ व एक आरआई की टीम ने सत्यापन किया।

कोर्ट ने 16 सितम्बर को अपने निर्णय में कहा कि इस होटल को षड़यंत्रपूर्वक अपराध की बुनियाद पर हासिल किया गया था, इसलिए भ्रष्टाचार अधिनियम की धारा 18-क में कुर्क किया जाना चाहिए।

वर्ष 2004 में केन्द्र की तत्कालीन एनडीए सरकार ने विनिवेश के नाम पर मात्र 7 करोड़ 52 लाख रुपये में यह होटल ललित ग्रुप ऑफ होटल्स को बेच दी थी। जिसका उदयपुर में जन सामान्य, लक्ष्मी विलास होटल कर्मचारी संघ एवं अन्य संगठनों ने भारी विरोध किया था और सीबीआई जांच की मांग की गई थी। इस बेशकीमती होटल में 100 कमरों के साथ लगभग 65 बीघा जमीन फतहसागर से लगती हुई है। इतनी विशालकाय सम्पत्ति को घाटे का उपक्रम मानते हुए कोड़ियों में तत्कालीन सरकार में अपना दखल रखने वाले होटल उद्यमी ललित सूरी के नाम कर दिया गया।

साल 2014 में यूपीए सरकार के वक्त मामले की सीबीआई जांच हुई, जिसमें भ्रष्टाचार मानते हुए पूर्व विनिवेश मंत्री अरूण शौरी, सचिव प्रदीप बैजल, पर्यटन सचिव रवि विनय झा, वित्तीय सलाहकार आशीष गुहा, निजी वैल्यूअर

कम्पनी के कांति करमसे और भारत होटल्स लिमिटेड की प्रतिनिधि ज्योत्सना सूरी पर मुकदमा दर्ज किया गया था। कोर्ट ने इन सभी के खिलाफ फौजदारी केस दर्ज करने के भी निर्देश दिए। इधर केन्द्र में सरकार बदलते ही सीबीआई का रवैया भी बदल गया। पहले उसने जिन साक्ष्यों पर 243.46 करोड़ का घोटाला माना था, पांच साल बाद उसको न तो आपराधिक साजिश दिखी और न ही किसी की मिलीभगत। सीबीआई ने अगस्त 2019 में क्लोजर रिपोर्ट लगा केस बन्द करने का फैसला कर लिया। स्पेशल जज पूरण कुमार शर्मा क्लोजर रिपोर्ट से सन्तुष्ट नहीं हुए। उन्होंने उच्च स्तर के अफसर से फिर से जांच के आदेश दे दिए। दोबारा जांच रिपोर्ट पेश हुई, जिसके आधार पर कोर्ट ने 16 सितम्बर 2020 को सम्पत्ति की कुर्की के आदेश दिए।

अपने निर्णय में न्यायालय ने लिखा कि जब सरकारी सम्पत्ति का दुरूपयोग होता है, नुकसान पहुंचाया जाता है या हानि की जाती है तो न्यायालय न मूक रह सकता है और न ही आंखें बन्द कर सकता है। न्यायालय का यह कर्तव्य है कि ऐसी स्थिति में वह सम्पत्ति के कस्टोडियन की हैसियत से कर्तव्य का निर्वाह करते हुए कानून की पेचिदगियों या उसमें आ रही बाधा को न्याय की सकारात्मक दृष्टि से दूर कर न्यायोचित आदेश पारित करे।

न्यायालय ने निर्णय में यह भी लिखा कि वर्तमान समय में नियम एवं कानून की जानकारी रखने वाले सफेदपोश अपराधी कानून की आड़ लेकर संगठित रूप से षडयन्त्र कर अपराध कारित करते हैं तथा उनके द्वारा किये गये कृत्य को विधि की परिधि में अपने पद व प्रभाव से ले आते हैं और कानून की तकनीकियां उन सफेदपोश अपराधियों का कुछ भी बिगाड़ नहीं पाती है।

कोर्ट ने कहा - 'यह अपराध है'

कोर्ट ने कहा कि सीबीआई ने ही जांच में पहले जमीन की कीमती 193 करोड़ और अन्य संपत्ति की कीमत 58 करोड़ रुपए मानी थी। यानि कुल 252 करोड़ के होटल को महज 7.52 करोड़ में बेचना युक्तिसंगत नहीं है। इसमें पद का दुरुपयोग करते हुए सरकार को सदोष हानि व भारत होटल को लाभ पहुंचाया गया है। इन आरोपियों के खिलाफ आईपीसी की धारा 420 व 120 बी तथा भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम में अपराध बनना पाया जाता है। इसलिए आरोपी गिरफ्तारी वारंट से तलब हो और भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम की धारा 18 क में कुर्की की कार्रवाई को जाकर राज्य सरकार के अधीन कर देना चाहिए। कोर्ट ने कलेक्टर को रिसीवर नियुक्त किया तथा उन्हें अपने निर्देशन में होटल का संचालन किसी दूसरी होटल संस्था से कराने और हर तीन महीने का हिसाब-किताब कोर्ट में पेश करने को कहा है। उधर आरोपियों ने राजस्थान हाईकोर्ट में याचिकाएं दायर कर सीबीआई की विशेष अदालत द्वारा पिछले साल जांच एजेंसी की क्लोजर रिपोर्ट लौटाने व हाल ही गिरफ्तारी वारंट जारी करने की समूची कार्यवाही निरस्त करने की मांग की है।

इनके बेचान की भी हो जांच

लक्ष्मीविलास पैलेस होटल के अदालती फैसले के बाद अखिल भारतीय आईटीडीसी एम्पलाईज यूनियन ने विनिवेश के नाम पर देश में अन्य जगहों पर बिकी 18 होटलों के बेचान की भी सीबीआई से जांच की मांग की है। लक्ष्मी विलास पैलेस होटल के बेचान के समय ही जिन होटलों को बेचा गया था। वे इस प्रकार हैं - दिल्ली कनिष्का होटल, अशोक यात्री निवास, कुतुब होटल, रणजीत होटल, कुतुब रेस्टोरेन्ट, एयरपोर्ट रेस्टोरेन्ट, कोलकाता की अशोक और एयरपोर्ट रेस्टोरेन्ट, वाराणसी अशोक, बौद्धगया अशोक, आगरा अशोक, औरंगाबाद अशोक, मनाली अशोक, कुल्लू अशोक, महाबलीपुरम् अशोक, बेंगलूरू अशोक, मदुरैई अशोक, पुरी की अशोका होटल आदि। यूनियन के महासचिव हिम्मत चांगवाल के अनुसार लक्ष्मी विलास पैलेस के बेचान के साथ ही उक्त होटलों को भी विनिवेश के नाम पर बेच कर हजारों करोड़ के नुकसान के साथ ही कईयों को बेरोजगार किया गया है।

सीबीआई न्यायालय द्वारा दिया गया निर्णय, सत्य की जीत है। न्यायालय ने पूर्व में सीबीआई की रिपोर्ट क्लोजर कर दी थी और पुनः जांच के आदेश दिए थे। कोर्ट ने दूध का दूध पानी का पानी कर दिया। समय जरुर लगा, लम्बे संघर्ष में सत्य की विजय हुई है।

- अम्बालाल नायक
अध्यक्ष, लक्ष्मीविलास बचाओ संघर्ष समिति

सरकारी उपक्रमों को कांग्रेस ने पनपाया। दूसरी सरकारों ने चहेतों को पनपाने के लिए इनको तहस-नहस कर दिया। न्यायालय का आदेश स्वागतयोग्य है।

- रघुवीर सिंह मीणा
पूर्व सांसद, उदयपुर

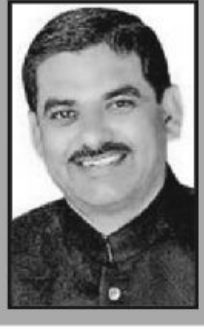

नवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाएं

स्व. किशन सिंह चुण्डावत

मै. चुण्डावत रेस्टोरेन्ट

मै. चुण्डावत कोल्ड कोर्नर

पृथ्वी सिंह चुण्डावत
9928147129

पुराना रेल्वे स्टेशन रोड, ठोकर चौराहा, उदयपुर

महात्मा गांधी की शिक्षा-दृष्टि

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 2 अक्टूबर, 2020 को 152वीं जयन्ती पर प्रस्तुत है- राजस्थान विद्यापीठ (विश्वविद्यालय), उदयपुर के संस्थापक प्रख्यात कवि, लेखक एवं शिक्षाविद् स्व. पं. जनार्दनराय नागर का विश्लेषणात्मक आलेख। जिसमें उन्होंने बापू की समग्र शिक्षा दृष्टि पर प्रकाश डालते हुए उनके द्वारा प्रतिपादित बेसिक शिक्षा को अन्तरात्मा के दर्शन के रूप में सम्पूर्ण मानव जाति के हित की शिक्षा बताया है। आज जनु भाई जीवित होते तो संभवतः नई शिक्षा नीति-2020 में गांधी जी की बेसिक शिक्षा का कुछ प्रभाव तो अवश्य देख पाते।

महात्मा गांधी ने इस युग में सर्वप्रथम भारतीय सन्तति की पूर्ण शिक्षा के लिये तीव्र व्यथा अनुभव की और उन्होंने अपने शुद्ध-बुद्ध अन्तरात्मा में देख कर भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा की बेसिक(आधारभूत) दृष्टि समूचे भारत-राष्ट्र को ही नहीं अपितु समूची मानव जाति के शिक्षा-चिन्तकों को प्रदान की। सच तो यह है कि महात्मा गांधी ने हमें बेसिक शिक्षा का महामंत्र ही प्रदान किया है।

पिछले 50-60 वर्षों से भारतीय शिक्षाविद् और मनीषी वर्तमान प्रचलित शिक्षा पद्धति को व्यर्थ मान चुके हैं तथा भारत-राष्ट्र के लिये मानव-जीवन के विकास प्रगति तथा सार्थक उत्थान के लिये उपयोगी शिक्षा पद्धति की तलाश में रहे हैं। महात्मा गांधी ने भारतीय शिक्षा मनीषियों को अपनी बेसिक शिक्षा की दृष्टि प्रदान कर उनका सदैव के लिये मार्गदर्शन किया है। यद्यपि आज भी महात्मा गांधी के शिक्षा-दर्शन के पूरे पाचन के लिये राष्ट्रीय जठराग्नि तीव्र नहीं हो सकी है, किन्तु भारत के कमल लोचन अपनी सन्ततियों के निर्माण, विकास तथा भारतीय जीवन के शील, शक्ति तथा सौन्दर्य के लिये बापू का शिक्षा-दर्शन अपनाते जा रहे हैं। भारतीय राजकरण भी देशकालानुसार गांधीजी की बेसिक शिक्षा के बोध को शिक्षा प्रणाली में सतत् संशोधनों द्वारा क्रियान्वित करने की चेष्टा कर रहा है।

गांधीजी ने प्रमाण-पत्रों तथा नौकरी के लिये डिग्रियों की शिक्षा नहीं, व्यष्टि तथा समष्टि के सर्वांगीण सार्थक शिक्षा की दृष्टि ही हमें दी है। गांधीजी की

बेसिक शिक्षा व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र एवं पृथ्वी पर समस्त मानव जाति के उत्कर्ष के लिये संजीवनी शक्ति स्वरूप है। आज की बुद्धि विलासी जानकारी की शिक्षा के बजाय गाँधीजी ने विचार को कर्मगत करने तथा अर्थ को बोधगम्य करने की शिक्षा ही को इंगित किया है। जो विचार कर्म का पुरूषार्थ न बन सके, जो अर्थ सार्थक होकर सक्षम न हो सके तथा जो बोध मानव जीवन का चैतन्य न हो सके, उसको गांधीजी ने 'शिक्षा का आधार' ही नहीं माना है। अत: पाठ्य पुस्तक, कक्षा तथा परीक्षा के वर्तमान प्रचलन को महात्मा गांधी ही नहीं महर्षि विनोबा तक के मनीषी एक व्यर्थ का निष्फल प्रयास ही मानते हैं। वैज्ञानिक-शिक्षाविद् डॉ. दौलतसिंह कोठारी ने महात्मा गांधी की बेसिक शिक्षा दृष्टि को 'ज्ञान और राम' की समन्वित प्रकाशमयी दृष्टि माना और भारतीय शिक्षा को ज्ञान, व्यवहार तथा सफल पुरुषार्थ का आधारभूत दर्शन ही कहा है।

वस्तुत: आज की प्रचलित शिक्षा प्रणाली केवल जानकारी का विश्लेषणात्मक बोध ही करवाती है, तब बापू की शिक्षा दृष्टि शाश्वत मानव के जीवन-चैतन्यों का बोध करवा कर उसको शील, शक्ति और सौन्दर्य के जीवन-निर्माण की प्रतिभा तथा क्षमता प्रदान करती है। जीवन के सभ्य और शान्ति, सम और उत्कर्षपूर्ण यापन के लिये गांधीजी ने कहा 'विचार को कर्म में उतारो, अर्थ को सार्थक करो तथा पुरूषार्थ को सफल करो। गांधी इस पृथ्वी पर मनुष्य को घर, पड़ौस, समाज तथा राष्ट्र एवं अन्तर्राष्ट्रीय समुदायों में उदार चेता, समर्थ, आत्मविश्वास से पूर्ण स्वावलम्बी एवं सत्य तथा अहिंसा की संस्कृति की तथा उसके लिये शिक्षा देना चाहते हैं और इसलिये गांधीजी ने शिक्षा की प्रक्रिया को सतत् जीवन के उत्थान के लिए शिक्षक एवं विद्यार्थी के लिये सर्वांगीण साधना ही माना है।'

गांधीजी ने शिक्षक के ज्ञान तथा विद्यार्थी की सफल अनुभूति पर ही अपनी शिक्षा-नीति में जोर दिया है। जो पढ़ो-पढ़ाओ और उसको तुरन्त व्यावहारिक सफल अनुभव में उतारो। गांधीजी ने कहा कि बेसिक शिक्षा मानव उत्तम योग तथा आत्मविश्वास से पूर्ण चतुर्दिक पुरूषार्थ की ही शिक्षा है। पूर्व मनीषियों की भाँति गांधीजी ने इस पृथ्वी पर मनुष्य के लिये अर्थ, धर्म, काम एवं मोक्ष की चेतना को शिक्षा ही वास्तविक तथा सच्ची शिक्षा बताई है। गांधीजी ने मानव-अन्तरात्मा की मूलभूत शान्तिप्रियता, जीवन के अहिंसात्मक चैतन्य तथा निष्पाप सौन्दर्य के दिव्य एवं भव्य उल्लास को आत्मसात् कर यह कहा है कि विद्या जगत को विज्ञान बल से प्राप्त करने का सिद्ध सामर्थ्य है तथा जीवन के शान्तिमय सुखी यापन के लिये क्षमता है। अत: विद्यार्थी विद्या प्राप्त करते हुए अपना आपा पा सकें तथा अपने समाज और राष्ट्र को सफल-धन्य कर सकें ऐसी शक्ति और चेतना से पूर्ण शिक्षा-नीति की भारत को आज और अभी आवश्यकता है।

गांधीजी ने विद्यार्थी के लिये विषय-ज्ञान देते समय उसके व्यावहारिक पक्ष पर पूरा जोर दिया है। सभी विधाएं केवल कही ही न जायें, पढ़ाई ही न जांय, व्यवहार में क्रियान्वित कर विद्यार्थी की प्रतिभा क्षमता तथा आकांक्षा को मूर्त रूप दिया जाय। गांधीजी तोता-रटन्त को शिक्षा कहते ही नहीं थे। गांधीजी जो जीवन में उतर सके, अनुभव में घुट सके तथा कर्म में सफल हो सके उसे ही शिक्षा कहते थे। सच तो यह है गांधीजी की बेसिक शिक्षा की दृष्टि सदैव की अन्तिम मनीषी-दृष्टि है। सन् 1972 ई. तक आते-आते चिंतक-राजनेता

भारत ज्योति श्री मन्नारायणजी ने सेवाग्राम(वर्धा) में भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा का यज्ञ कर महात्मा गांधी की बेसिक शिक्षा की दृष्टि को राष्ट्रीय जीवन के निर्माण तथा राष्ट्रीय चरित्र के उत्कर्ष एवं राष्ट्रीय पुरूषार्थों की सफलता के लिये महात्मा गांधी राष्ट्रीय भारतीय शिक्षा का मन्तव्य प्रदान किया। सन् 1972 ई. में सेवाग्राम में बापू की पुण्य लोक कीर्तिकाय दिव्य स्मृति में राष्ट्र के शिक्षा मंत्रियों, शिक्षाविदों तथा नई तालीम के नेतृ कार्यकर्ताओं के सम्मेलन में बापू की बेसिक शिक्षा की दृष्टि को पूर्णत: अपनाने, नौकरियों एवं पद-प्रतिष्ठा के लिये नहीं किन्तु भारतीय नागरिक के जनतांत्रीय धर्मनिरपेक्ष समाजवादी और सम तथा शान्ति के सार्थक और सफल शिक्षण के लिये स्वीकारने का साग्रह निवेदन किया। भारतीय शिक्षा गांधीजी के अर्थ में व्यक्ति तथा समाज के दिव्य तथा भव्य जीवन विकास प्रगति और सामर्थ की शिक्षा है।

बापू की शिक्षा दृष्टि शाश्वत मानव के जीवन-चैतन्यों का बोध करवा कर उसको शील, शक्ति और सौन्दर्य के जीवन-निर्माण की प्रतिभा तथा क्षमता प्रदान करती है। जीवन के सभ्य और शान्ति, सम और उत्कर्षपूर्ण यापन के लिये गांधीजी ने कहा 'विचार को कर्म में उतारो, अर्थ को सार्थक करो तथा पुरूषार्थ को सफल करो। गांधी इस पृथ्वी पर मनुष्य को घर, पड़ौस, समाज तथा राष्ट्र एवं अन्तर्राष्ट्रीय समुदायों में उदार चेता, समर्थ, आत्मविश्वास से पूर्ण स्वावलम्बी एवं सत्य तथा अहिंसा की संस्कृति की तथा उसके लिये शिक्षा देना चाहते हैं और इसलिये गांधीजी ने शिक्षा की प्रक्रिया को सतत् जीवन के उत्थान के लिए शिक्षक एवं विद्यार्थी के लिये सर्वांगीण साधना ही माना है।'

गांधीजी ने कक्षा के बजाय विषय तथा उसके क्षेत्र की जानकारी देने तथा उसकी विद्या प्राप्ति के लिये केन्द्र बिन्दु माना है और यह माना है कि विचार तब तक शक्ति नहीं बनता जब तक शिक्षक विद्यार्थी के जीवन-अनुभव में उसको क्रियान्वित करने का व्यावहारिक क्षमता उत्पन्न नहीं कर दे। गांधीजी ने विचार का परित्याग नहीं किया। विचार को कर्म में मूर्त रूप देने का अटल आग्रह ही शिक्षक के समक्ष रखा है। गांधीजी ने विद्यार्थी को 'बाबू' बनने के लिये नहीं, अपने राष्ट्र के दिव्य तथा भव्य नागरिक बनने के लिये ही कहा है। आखिरकार शिक्षा का ध्येय व्यक्ति और राष्ट्र के सर्वांगीण जीवन एवं चरित्र निर्माण का ही तो है-हो सकता है। गांधीजी की बेसिक शिक्षा कुल मिलाकर शान्त, सज्जन वीर तथा सत्य के लिए सतत् सन्नद मानवता की ही शिक्षा है। बापू की शिक्षा अन्तरात्मा के दर्शन और अन्त में आत्मलाभ के लिये ही है।

नवरात्रि पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं

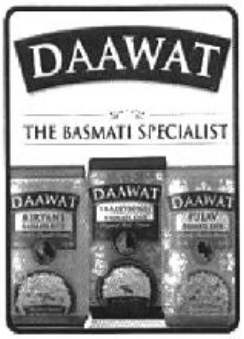

94141-60671 (Sirumal)
94141-57343 (Dilip)
94141-62036 (Lakhmichand)
99503-00412 (Lakhmichand)

POPULAR
ब्राण्ड

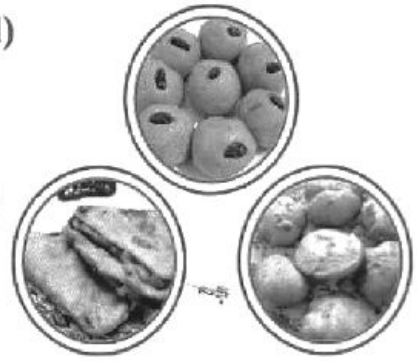

दलिया, बेसन, बाटी–आटा के निर्माता

MP का आदित्य आटा
एवं
पापुलर ब्राण्ड हलवाई
स्पे. मैदा उपलब्ध है

मोहन ट्रेडिंग कम्पनी

अधिकृत विक्रेता : दावत बासमती चावल

हर प्रकार के चावल, दालें, मैदा, सूजी, बेसन, पौहा के होलसेल व्यापारी

153, कृषि उपज मण्डी यार्ड, उदयपुर (राज.) Phone : 0294-2483671, 2464036 (R)

प्लांट : जी–1, 414, सिक्योर मीटर के पीछे, कैम्बे होटल के पहले वाली गली, भामाशाह इण्ड. एरिया, कलड़वास, उदयपुर (राज.)

प्रणब मुखर्जी एक भद्र युग की विदाई

✍ फिरोज अहमद शेख

प्रणब मुखर्जी दलगत दायरे से ऊपर उठकर व्यवहार करने वाले सभी दलों के नेताओं के चहेते थे, वहीं समाज के गरीब तबकों के लोग उन्हें अपना हमदर्द समझते थे। अध्ययनशीलता, शालीनता, उद्यमशीलता और लोकतांत्रिक व्यवहार की दृष्टि से वह जो शून्य छोड़ गए हैं, उसकी भरपाई नामुमकिन है।

प्रणब दा के निधन से पूरा भारत दुखी है राष्ट्र के विकास पथ पर उनके अमिट पद चिह्न हैं। भारत राष्ट्र के दिग्गज राजनेताओं में शुमार प्रणब मुखर्जी का जाना भारतीय राजनीति से एक भद्र युग की विदाई है। अध्ययनशीलता, शालीनता, उद्यमशीलता और लोकतांत्रिक व्यवहार की दृष्टि से वह जो शून्य छोड़ गए हैं, उसको भरपाई नामुमकिन है। देश का यह उदार चिंतनशील नेता 84 की उम्र में भी बिना पद सबका ध्यान खींचने में कामयाब था और राष्ट्रपति पद से विदाई के बावजूद इनकी प्रासंगिकता और उपस्थिति सशक्त थी। मस्तिष्क से एक थक्का हटाने के लिए की गई शल्य चिकित्सा के बाद वह स्वास्थ्य लाभ में लगे थे, पर दुर्भाग्य, उन्हें कोविड-19 ने घेर लिया। उनके कोमा में होने के बावजूद एक आशा थी कि वह फिर लौट आएंगे और हमेशा की तरह कुछ नया करके या बोलकर सबको चौंका देंगे, लेकिन दिल्ली के सैन्य अस्पताल में भारतीय राजनीति का यह सच्चा सेनापति 31 अगस्त को सबको उदास कर गया। प्रणब मुखर्जी दलगत दायरे से ऊपर उठकर व्यवहार करने वाले सभी दलों के नेताओं के चहेते थे, वहीं समाज के गरीब तबकों के लोग उन्हें अपना हमदर्द समझते थे। अपने गृह राज्य पश्चिम बंगाल के वीर भूम जिले के मिराती गांव में जन्मे मुखर्जी का परिवार काफी गरीब था। स्कूली शिक्षा के लिए काफी दूर तक पैदल जाते थे। गांव की मिट्टी में खेला बालक जब देश के सर्वोच्च पद राष्ट्रपति तक पहुंचा तो हर गरीब आदमी स्वयं को महान समझने लगा। अपनी विद्वता की वजह से उन्हें राजनीति में नई पहचान मिली। उनकी प्रतिभा को देखते हुए 1969 में पश्चिम बंगाल के तत्कालीन मुख्यमंत्री स्व. अजय मुखर्जी ने उन्हें राज्यसभा में भेजा। यहां पहुंचकर प्रणब मुखर्जी ने सदन में बैंकों के राष्ट्रीयकरण के मुद्दे पर भाषण दिया तो स्वयं प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी लोकसभा छोड़कर राज्यसभा में आई और मुखर्जी को ध्यानपूर्वक सुना और प्रभावित हुई। इंदिरा ने ऐसे विद्वान व कुशाग्र व्यक्ति को कांग्रेस में शामिल करने में देर नहीं की। वे इंदिरा जी के विश्वासपात्र बने और पार्टी के प्रमुख रणनीतिकारों में गिने जाने लगे।

2004 में पहला लोकसभा चुनाव लड़े और जीते

प्रणब ने पहली बार 2004 में पश्चिम बंगाल के जंगीपुर से लोकसभा चुनाव लड़ा। उसी के साथ कांग्रेस की अगुवाई में यूपीए सत्ता में आया। वह लोकसभा में कांग्रेस के नेता बने और 30 साल के बाद एक बार फिर प्रधानमंत्री पद के प्रबल दावेदार माने जा रहे थे। वर्ष 2004 से 2012 के दौरान वह रक्षा, वित्त और विदेश मंत्री रहे।

भारत रत्न से नवाजा गया

प्रणब मुखर्जी को 26 जनवरी 2019 को भारत रत्न से सम्मानित किया गया। सार्वजनिक जीवन में उल्लेखनीय योगदान के लिए उन्हें 2008 में भारत के दूसरे सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार पद्म विभूषण से भी नवाजा गया था। बांग्लादेश ने उन्हें 2013 में 'बांग्लादेशी मुक्तिजोद्धो सम्मोनो' पुरस्कार से नवाजा था।

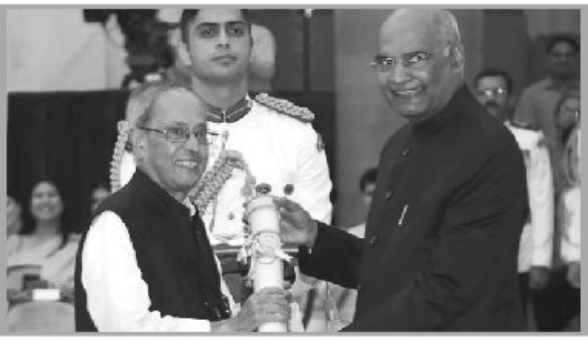

कई किताबें भी लिखीं

प्रणब मुखर्जी ने कई किताबें भी लिखीं। इनमें मिडटर्म पोल, बियोंड सरवाइवल, ऑफ द ट्रैक-सागा ऑफ स्ट्रगल एंड सैक्रिफाइस, इमर्जिंग डाइमेंशंस ऑफ इंडियन इकोनॉमी प्रमुख तौर पर शामिल हैं।

सोनिया को राजनीति में लाए

सोनिया गांधी को सक्रिय राजनीति में लाने में प्रणब दा की अहम भूमिका रही। 1998-99 में वे कांग्रेस महासचिव बने। बंगाल में प्रदेश अध्यक्ष की जिम्मेदारी वर्ष 2000 से 2010 तक संभाली।

इंदिरा गांधी ने मुखर्जी की प्रतिभा को पहचानते हुए कांग्रेस में शामिल कर 1969 और उसके बाद 1975, 1981 में राज्यसभा में भेजा। इसके बाद भी वे 1993 और 1999 में राज्यसभा के लिए चुने गए। 2012 में वे देश के 13वें राष्ट्रपति बने।

इंदिरा जी के प्रति निष्ठावान

प्रणब ने अपनी आत्मकथा में लिखा था, 'मेरे पिता कामदा किंकर मुखर्जी एक निष्ठावान राष्ट्रवादी और समर्पित कांग्रेस कार्यकर्ता थे। जब बंगाल में बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता और नेता नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के अनुयायी बन गए थे, तब मेरे पिता उन मुट्ठी भर लोगों में थे जो महात्मा गांधी के प्रति पहले की तरह निष्ठावान रहे। मुझे उनसे यह बड़ी सीख मिली। उनके इसी समर्पण और निष्ठा को प्रणब ने जिंदगी का मूलमंत्र बनाया और सफलता की सीढ़ियां चढ़ते चले गए।

किताब में प्रणब ने 1978 में इंदिरा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस के विभाजन का भी उल्लेख किया है। तब पिता ने उनसे कहा था, 'मैं आशा करता हूं कि तुम ऐसा कुछ भी नहीं करोगे, जिससे मुझे लज्जित होना पड़े। जब तुम किसी का संकट की घड़ी में साथ देते हो तभी तुम्हारी मानवता सामने आती है। ऐसा कुछ भी नहीं करना, जिससे तुम्हारे पूर्वजों के नाम पर धब्बा लगे।' पूर्व राष्ट्रपति के अनुसार, पिता की बातों का अर्थ पूरी तरह स्पष्ट था और मैंने तब भी और बाद में भी कभी इंदिरा जी के प्रति अपनी निष्ठा में कभी कमी नहीं आने दी।

आरोपों से उबरकर मजबूत हुए

प्रणब पर आपातकाल के दौरान गैरसंवैधानिक तरीकों का उपयोग करने का आरोप लगा। इसके बावजूद वह मजबूत हुए। कांग्रेस जब दोबारा भारी बहुमत से जीती ओर वे राज्यसभा में 1980 में कांग्रेस पार्टी के नेता बने। 1982 में वित्त मंत्री बने। प्रधानमंत्री की देश में गैरमौजूदगी के दौरान प्रणब ही कैबिनेट की अध्यक्षता करते थे। हालांकि प्रणब दा का राजनीतिक दृष्टि से सम्बन्ध कांग्रेस से रहा था। कांग्रेस और आरएसएस की विचारधाराओं में कुछ मूलभूत अंतर रहे हैं। इसके बावजूद वे राष्ट्रपति के पद से निवृत होने के बाद एक बार आरएसएस के बुलावे पर उसके एक कार्यक्रम 'संघ शिक्षा वर्ग - तृतीय वर्ष' के समापन समारोह में बतौर मुख्य अतिथि नागपुर स्थित संघ मुख्यालय पहुंच गए थे।

उनके वहां जाने को लेकर काफी विवाद हुआ था। कई कांग्रेस नेताओं ने उनका मुखर विरोध किया था। विरोधियों की इस सूची में उनकी बेटी और कांग्रेस नेत्री शर्मिष्ठा मुखर्जी भी शामिल थी। उसने कहा था कि आपकी बातें भुला दी जाएंगी। सिर्फ आपके फोटो रह जाएंगे। कांग्रेस में हो रहे इस बड़े विरोध के बाद भी वे पीछे नहीं हटे और कार्यक्रम में शामिल हुए। वे एक मजे हुए राजनीतिज्ञ थे। कार्यक्रम के दौरान भाषण भी ऐसा दिया जिससे उनका विरोध कर रहे कांग्रेसियों को उनके प्रति कहे गये शब्दों पर शर्म महसूस हुई। उन्होंने संघ को नेहरू और गांधी के राष्ट्रवाद का पाठ पढ़ाया। गांधी और नेहरू का उदाहरण प्रस्तुत कर राष्ट्रवाद को समझाते हुए उन्होंने कहा, गांधीजी ने कहा है, ये भारतीय राष्ट्रवाद न तो विभेदकारी था, न आक्रामक ओर न ही विध्वंसक। ये वही राष्ट्रवाद है जिसे इतने विस्तार से पंडित जवाहर लाल नेहरू ने डिस्कवरी ऑफ इंडिया में दिखाया है।

ऐसे आए राजनीति में

प्रणब एक राजनीतिक परिवार से थे। उनके पिता कांग्रेस पार्टी के सदस्य थे और ब्रिटिश राज में उन्होंने करीब 10 साल जेल में भी गुजारे थे। शाम को उनके घर में सिर्फ राजनीति की बातें होती थीं, इसलिए वे इससे भलीभांति परिचित थे। शिक्षक के रूप में अपनी सेवाएं देते समय एक ऐसी घटना हुई, जिसने उन्हें राजनीति में आने को प्रेरित किया। 1966 में कांग्रेस के तत्कालीन अध्यक्ष अजय मुखर्जी को उनके पद से हटा दिया गया था। प्रणब को यह बहुत खराब लगा था। जब मुखर्जी कांग्रेस कार्यकर्त्ताओं को लेकर एक नया संगठन बांग्ला कांग्रेस को खड़ा करने में जुटे थे, तब प्रणब उनके साथ आ गए थे।

मोदी के साथ जीएसटी का आगाज

राष्ट्रपति रहते एक जुलाई 2017 जीएसटी का उनका सपना तब पूरा भी हुआ, जब उन्होंने आधी रात को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ बटन दबाकर देश के सबसे बड़े कर सुधार का आगाज किया। प्रणब दा ने तब कहा था, कई सरकारों के प्रयत्न के बाद मेरा सपना पूरा हुआ।

बहन की भविष्यवाणी

एक न्यूज चैनल को दिए इंटरव्यू में एक बार प्रणब दा ने बताया था कि जब वे युवा सांसद थे, तब उन्होंने पड़ौस के प्रेजिडेंट हाउस देखते हुए अपनी बहन से कहा था कि अगले जन्म में मैं कुलीन प्रजाति के घोड़े के रूप में जन्म लेना चाहता हूं, ताकि राष्ट्रपति भवन में पहुंच सकूं। इस बात पर उनकी बहन ने तभी कहा था कि राष्ट्रपति का घोड़ा क्यों बनोगे, तुम इसी जीवन और जन्म में राष्ट्रपति बनोगे। तब मुखर्जी ने उनसे 10 साल बड़ी बहन अन्नपूर्णा के साथ दिल्ली में अपने आधिकारिक आवास के बरामदे में चाय की चुस्कियां लेते हुए बातचीत कर रहे थे। तभी उन्होंने घोड़ा बनने की बात कही तो अन्नपूर्णा ने कहा था कि तुम्हारे आवास से राष्ट्रपति भवन दूर नहीं है। राष्ट्रपति का घोड़ा क्या बनोगे, तुम इसी जीवन में राष्ट्रपति बनोगे।

पीएम ही रहूंगा

प्रणब दा ने एक मौके पर कहा था कि प्रधानमंत्री तो आते-जाते रहेंगे, लेकिन मैं हमेशा पीएम(प्रणब मुखर्जी) ही रहूंगा। यकीनन प्रणब भले ही देश के प्रधानमंत्री नहीं बने हों पर विभिन्न पदों पर रहते हुए उन्होंने सरकार और कांग्रेस के लिए संकटमोचक की भूमिका निभाई। करीब पचास साल के अपने राजनीतिक जीवन में प्रणब मुखर्जी ने प्रधानमंत्री को छोड़कर हर महत्वपूर्ण पद पर काम किया। यूपीए-एक और दो में उनकी संकटमोचक की भूमिका ने सरकार की स्थिरता में बेहद अहम किरदार निभाया। खुद पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने कहा था कि सरकार को जब भी किसी जटिल मुद्दे का हल निकालना होता था, तो मंत्रिसमूह का गठन किया जाता और अधिकतर के अध्यक्ष प्रणब मुखर्जी ही होते थे। उल्लेखनीय है कि सन् 1984 व 1991 में दो मौके ऐसे आए जब प्रणब दा प्रधानमंत्री की कुर्सी के हकदार होने के बावजूद उस तक नहीं पहुंच सके।

नवरात्रि पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं

Kailash Agarwal
9414159130

Pankaj Agarwal
9414621211

YUVRAJ PAPERS

Yuvraj Papers

Papers | Printing | Stationery

11-A, Indira Bazar, Nada Khada, Near Bapu Bazar,
Udaipur - 313001 Phone :- + 91-294-2418586

email : info@yuvrajpapers.com

अब न कोई सोयेगा भूखा

राजस्थान के हर शहर-कस्बे में 'इन्दिरा रसोई'

✍ पंकज कुमार शर्मा

राजस्थान सरकार ने सूचनाक्रांति के प्रणेता पूर्व प्रधानमंत्री स्व. राजीव गांधी की जयंती सद्भावना दिवस पर 20 अगस्त 2020 से प्रदेश के सभी 213 नगर निकायों में 358 इन्दिरा रसोई घर शुरू किए हैं। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने इसका जयपुर में वर्चुअल उद्घाटन किया। वे एक संवेदनशील व्यक्ति हैं। पिछले कार्यकाल में और इस बार भी उन्होंने ऐसी कई योजनओं को मूर्त रूप दिया, जिनसे गरीब और मध्यम वर्ग के लोगों को सीधा लाभ पहुंचे। पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के नाम को समर्पित इस योजना के मूल में गहलोत का लक्ष्य यह है कि उनके प्रदेश में 'कोई भी भूखा न सोये।' इन्दिराजी ने गरीबों, पिछड़ों, वंचितों एवं असहाय लोगों के कल्याण के लिए गरीबी हटाओ का नारा देते हुए अनेक कार्यक्रम शुरू किए थे। बीस सूत्री कार्यक्रम इसी का एक हिस्सा था। भारत को खाद्यान के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने के लिए हरित क्रांति जैसा सफल अभियान चलाया। पिछली सरकार में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने महिलाओं, बुजुर्गों और जरूरतमंद परिवारों के सम्मान के लिए सामाजिक सुरक्षा पेंशन तथा हर व्यक्ति को बेहतर चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए मुख्यमंत्री नि:शुल्क दवा एवं जांच जैसी जनकल्याणकारी योजना शुरू कर उनका सफल क्रियान्वयन भी सुनिश्चित किया था। ये रसोई घर अधिक आबादी घनत्व वाले स्थानों यथा – रेलवे स्टेशन, बस स्टैण्ड, अस्पताल अथवा अत्यधिक व्यस्त मार्गों पर संचालित किए जा रहे हैं। इस रसोई घर से प्रतिदिन 1.34 लाख व्यक्ति एवं प्रतिवर्ष 4.87 करोड़ लोगों को लाभान्वित करने का लक्ष्य है। लाभार्थी को मात्र 8 रुपए में शुद्ध, ताजा एवं पौष्टिक भोजन मिल रहा है। भोजन मेन्यू में मुख्य रूप से प्रति थाली 100 ग्राम दाल, 100 ग्राम सब्जी, 250 ग्राम चपाती एवं अचार शामिल है। रसोईघर संचालकों को स्पष्ट हिदायत दी गई है कि वे लाभार्थी को सम्मानपूर्वक स्वच्छ स्थान पर बिठाकर उन्हें प्रेम से भोजन करवाएं। कोरोना महामारी के चलते उन्हें कुछ खास निर्देश भी दिए गए हैं, जिनकी पालना उन्हें निश्चित तौर पर करनी होगी। इन्दिरा रसोई में कोई भी व्यक्ति बिना किसी भेदभाव के भोजन ग्रहण कर सकता है। भोजन के लिए किसी पहचान पत्र अथवा दस्तावेज की आवश्यकता नहीं है। कोई भी व्यक्ति अपने परिजनों के जन्मदिवस अथवा अन्य किसी उपलक्ष्य में एक समय अथवा दोनों समय का भोजन चाहे जितने लोगों के लिए इंदिरा रसोई के माध्यम से प्रायोजित कर सकता है। इसके लिए उन्हें 20 रुपए प्रति थाली का भुगतान करना होगा। भोजन में गुणवत्ता सही नहीं होने पर सम्बन्धित निकाय प्रमुख अथवा जिला कलक्टर को शिकायत की जा सकती है।

योजना की विशेषताएं

- विकेन्द्रित स्वरूप – जिला स्तरीय समिति को आवश्यकतानुसार स्थान, मैन्यू व भोजन समय के चयन की स्वतन्त्रता
- राज्य सरकार द्वारा 12 रुपये प्रति थाली अनुदान
- योजना हेतु प्रतिवर्ष 100 करोड़ रुपये का प्रावधान
- रियल टाइम ऑनलाइन मॉनिटरिंग एसएमएस गेटवे से लाभार्थी को सूचना एवं फीडबैक सुविधा
- प्रत्येक रसोई संचालन हेतु एक मुश्त 5 लाख रुपये आधारभूत एवं 3 लाख रुपये प्रतिवर्ष आवर्ती व्यय का प्रावधान
- सहकारिता अधिनियम के तहत विधिक व संस्थागत स्वरूप
- सामान्यत: दोपहर का भोजन प्रात: 8.30 बजे से मध्यान्ह 1.00 बजे तक एवं रात्रिकालीन भोजन सायंकाल 5.00 बजे से 8.00 बजे तक उपलब्ध होगा।
- समय समय पर जिला स्तरीय समिति द्वारा निरीक्षण व गुणवत्ता जाँच की जायेगी।
- संस्था का चयन जिला स्तरीय समन्वय एवं मॉनिटरिंग समिति द्वारा किया जाएगा।

प्रशासनिक व्यवस्था	◆ राज्य/जिला स्तरीय प्रबन्धन व मॉनिटरिंग समिति का गठन ◆ स्थानीय संस्थाओं को चयन में प्राथमिकता ◆ योजना की स्थायी एजेण्डा के माध्यम से नियमित समीक्षा			
भोजन की संख्या	नगर निगम – 300 थाली दोपहर व 300 थाली रात्रि भोजन नगर परिषद – 150 थाली दोपहर व 150 थाली रात्रि भोजन नगर पालिका – 150 थाली दोपहर व 150 थाली रात्रि भोजन			
रसोईयों की संख्या	क्षेत्र	संख्या	रसोई संख्या	विवरण
	नगर निगम	10	87	जयपुर 20, कोटा, जोधपुर 16, अजमेर, बीकानेर, उदयपुर – 10 एवं भरतपुर 5
	नगर परिषद	34	102	3 रसोई प्रति नगर परिषद
	नगर पालिका	169	169	1 रसोई प्रति नगर पालिका
	योग	213	358	

योजना में जनसहभागिता

इस योजना में व्यक्ति/संस्था कॉर्पोरेट/फर्म आर्थिक सहयोग कर सकते हैं। दान/सहयोग मुख्यमंत्री सहायता कोष अथवा रजिस्टर्ड जिला स्तरीय इंदिरा रसोई के बैंक खाते में ही किया जा सकेगा। रसोई में परिजनों के वर्षगांठ, जन्मदिवस या अन्य किसी उपलक्ष्य में दोपहर/रात्रि या दोनों समय का भोजन प्रायोजित भी किया जा सकता हैं।

पाठक पीठ

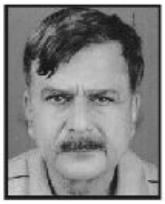

भगवान श्रीराम की नगरी अयोध्या में मंदिर भूमि पूजन एवं भावी विकास को लेकर दो अलग-अलग आलेखों में दी गई समग्र जानकारी के लिए धन्यवाद! निश्चय ही अगले पांच वर्षों में अनूठी होगी श्रीराम की यह नगरी।

– महेश जेठा

नई शिक्षा नीति-2020 केन्द्र सरकार की व्यापक दृष्टि और शिक्षाविदों के सतत् चिंतन की परिणति है। इस सम्बन्ध में प्रकाशित आलेख में समाविष्ट जानकारी से उम्मीद बंधती है कि यह शिक्षा नीति केवल डिग्रियां ही बांटने वाली नहीं होगी, युवाओं को बेहतर रोजगार देकर उनके सपनों को पंख भी देगी।

– महेश चन्द्र शर्मा

महेन्द्र सिंह धोनी अब मैदान पर दिखाई नहीं देंगे, इससे क्रिकेट प्रेमियों को काफी निराश हुई है। लेकिन उन्होंने इस खेल में जो सूझबूझ, रणनीति व व्यवहार का प्रदर्शन कर योगदान दिया उससे वे 'क्रिकेट के बादशाह' बने रहेंगे।

– मुकेश कुमार नलवाया

'घाटी में फिर आतंक के अंकुर' सम्पादकीय सटीक था। केन्द्र एवं राज्य सरकार को राष्ट्रद्रोहियों एवं सीमापार से आने वाले गुर्गों के खिलाफ सतत् सख्ती बरतने की जरूरत है, ऐसा इसलिए भी जरूरी है कि हमें कश्मीर का शेष हिस्सा भी पाकिस्तान के चंगुल से मुक्त करवाना है।

– सनी नाचानी

Wish You a Happy Navratri

जे पी ऑर्थोपेडिक हॉस्पिटल
उदयपुर

26 वर्षों से
आपके लिए

For More Visit Us : www.jporthohospital.com

24x7 HELPLINE No: +91 7229933999

Facilities

- ICU, Modular Theater
- Digital X-Ray
- Modular Plaster Room
- C-ARM Machine
- Physiotherapy
- All Kinds Of Orthopedic Surgery
- Nailing
- Plating
- Prosthesis,
- Fixator etc.

100, Main MB College Road, Kumharo Ka Bhatta,
Udaipur-313001 Tel : 0294-2413606
E-mail : jp_taruna@yahoo.co.in

शुभं भवतु,कल्याणं, आरोग्य सुखवर्धनम्।
आत्मतत्त्व प्रबोधाय, ज्योति देवि नमोऽस्तुते॥

नवरात्र त्रिगुणमयी प्रकृति का मिलन

✍ राव कल्याण सिंह

योग माया दुर्गा मूल प्रकृति है। जब दो प्रकृतियों का आपस में मिलन होता है, यानी ग्रीष्म ऋतु की विदाई है और शरद का आगमन हो रहा हो तब इन दो ऋतुओं के मिलन को नवरात्र कहते हैं। ये नौ दिन प्रकृति के मिलन के ही हैं। प्रकृति सत्व, रज और तम गुणों के कारण त्रिगुणमयी है। इन तीनों गुणों के मिश्रण से प्रकृति के नौ रूप हैं, इसलिये ये नौ दिन शक्ति की आराधना के लिये प्रमुख माने गये हैं। बसंत और शरद् ऋतुएं स्वच्छ और सुखद हैं, किन्तु इन्हीं ऋतुओं से ग्रीष्म और शीत का बढ़ना शुरू होता है। ग्रीष्म और शीत का प्रकोप रोगादि के रूप में कहर बरपाता है, इसलिये प्रकृति के प्रकोप से बचने के लिये प्रकृति की आराधना उचित ही है। इन नौ दिनों में प्रकृति देवी माँ दुर्गा की ही पूजा-अर्चना की जाती है। दुर्गा शक्ति की प्रतीक हैं। बिना शक्ति के कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं होता है। शक्ति तीन प्रकार की है, देह बल, धन बल और बुद्धि बल।

इन तीनों बलों को यह प्रकृति समान रूप से जातक को प्रदान करती है, ताकि उसकी जीवन यात्रा सुचारू चले। ब्रह्मांड में तीन ही सर्वशक्तिमान हैं। ब्रह्मा, विष्णु, महेश और उनकी तीन ही शक्तियां हैं। ये हैं - सरस्वती, लक्ष्मी और महाकाली। शक्ति के अवतार के बिना महिषासुर का वध हो ही नहीं सकता था। इसलिए सरस्वती, लक्ष्मी और महाकाली तीनों शक्तियों में से एक शक्ति उत्पन्न हुई, जिसका नाम महा योगमाया दुर्गा हुआ। चंड और मुंड को मारने के लिए दुर्गा में से एक शक्ति उत्पन्न हुई। उसका नाम चामुंडा हुआ। सरस्वतीजी ने अपना बीज मंत्र योगमाया दुर्गा को दिया कि मेरे मंत्र का जाप करने वाले जातक को बुद्धि-बल प्राप्त होते रहेंगे। लक्ष्मीजी ने अपना 'ह्री' बीज मंत्र दिया और कहा कि मेरे मंत्र का जाप करने वाले के पास कभी धन की कमी नहीं होगी। इसी प्रकार महाकाली ने अपना 'क्लीं' बीज मंत्र माँ दुर्गा को दिया, जिसके जप से जीव के अंदर शारीरिक बल प्राप्त होता रहेगा।

प्रथमं शैलपुत्री

प्रथम नवरात्र के दिन माँ दुर्गा के पहले स्वरूप शैलपुत्री की पूजा की जाती है। पर्वतराज हिमालय के यहां पुत्री के रूप में उत्पन्न होने के कारण इनका नाम शैलपुत्री पड़ा था। वृषभ स्थिता इन माँ के दाहिने हाथ में त्रिशूल और बायें हाथ में कमल-पुष्प सुशोभित है। नव दुर्गाओं में प्रथम शैलपुत्री का महत्व और शक्तियां अनन्त हैं। नवरात्र पूजन में प्रथम दिन इन्हीं की पूजा और उपासना की जाती है। इस दिन उपासना में योगी अपने मन को मूलाधार चक्र में स्थित करते हैं। यहीं से उनकी योगसाधना का आरम्भ होता है।

द्वितीयं ब्रह्मचारिणी

मां दुर्गा की नव शक्तियों का दूसरा स्वरूप ब्रह्मचारिणी है। माँ दुर्गा का यह स्वरूप भक्तों और सिद्धों को अनन्तफल देने वाला है। इनकी उपासना से मनुष्य में तप, त्याग, वैराग्य, सदाचार और संयम की वृद्धि होती है। माँ ब्रह्मचारिणी देवी की कृपा से उसे सर्वत्र सिद्धि और विजय प्राप्त होती है। दुर्गा पूजा के दूसरे दिन इन्हीं के स्वरूप की उपासना की जाती है। इस दिन साधक का मन स्वाधिष्ठान चक्र में स्थित होता है। इस चक्र में अवस्थित मन वाला योगी उनकी कृपा और भक्ति प्राप्त करता है।

तृतीयं चन्द्रघंटेति

मां दुर्गा की तीसरी शक्ति का नाम चन्द्रघंटा है। नवरात्रि-उपासना में तीसरे दिन इन्हीं के विग्रह का पूजन होता है। इनका यह स्वरूप परम शान्तिदायक और कल्याणकारी है। इनके मस्तक में घंटे के आकार का अर्धचन्द्र है, इसी कारण इन्हें चन्द्रघंटा देवी कहा जाता है। इनके शरीर का रंग स्वर्ण के समान चमकीला है। इनके दस हाथ हैं। नवरात्र में तीसरे दिन की पूजा का अत्यधिक महत्व है। इस दिन साधक का मन मणिपूर चक्र में प्रविष्ट होता है। माँ चन्द्रघंटा की कृपा से उसे अलौकिक वस्तुओं के दर्शन होते हैं। दिव्य सुगन्धियों का अनुभव होता है तथा विविध प्रकार की दिव्य ध्वनियां सुनाई देती हैं। ये क्षण साधक के लिए अत्यंत सावधान रहने के हैं। माँ चन्द्रघंटा की कृपा से साधक के समस्त पाप और बाधाएं विनष्ट हो जाती है। इनकी आराधना सद्य : फलदायी है।

कूष्माण्डेति चतुर्थकम्

मां दुर्गाजी के चौथे स्वरूप का नाम कूष्मांडा है। अपनी मंद मुस्कान द्वारा अंड अर्थात ब्रह्मांड को उत्पन्न करने के कारण इन्हें कूष्मांडा देवी के नाम से अभिहित किया गया है। यही सृष्टि की आदि स्वरूपा आदि शक्ति हैं। नवरात्र पूजन के चौथे दिन कूष्मांडा देवी की स्वरूप की उपासना की जाती है। इस दिन साधक का मन अनाहत चक्र में अवस्थित होता है। अत: इस दिन उसे अत्यंत पवित्र मन से कूष्मांडा देवी के स्वरूप को ध्यान में रखकर पूजा के कार्य में लगना चाहिए। माँ कूष्मांडा की उपासना से भक्तों के समस्त रोग-शोक विनष्ट हो जाते हैं। इनकी भक्ति से आयु, यश, बल और आरोग्य की वृद्धि होती है।

पंचम स्कन्दमातेति

मां दुर्गाजी के पांचवें स्वरूप को स्कन्दमाता के नाम से जाना जाता है। ये भगवान स्कन्द कुमार कार्त्तिकेय के नाम से भी जाने जाते हैं। इन्हीं भगवान स्कन्द की माता होने के कारण माँ दुर्गाजी के इस पांचवें स्वरूप को स्कन्दमाता के नाम से जाना जाता है। इनकी उपासना नवरात्र के पांचवें दिन की जाती है। इस दिन साधक का मन विशुद्ध चक्र में अवस्थित होता है। नवरात्र के पांचवें दिन का शास्त्रों में पुष्कल महत्व बताया गया है।

षष्ठं कात्यायनी

माँ दुर्गा का छठवां स्वरूप कात्यायनी है। दुर्गा पूजा के छठवें दिन माँ कात्यायनी की उपासना की जाती है। उस दिन साधक का मन आज्ञा चक्र में स्थित होता है। इस चक्र में स्थित मन वाला साधक माँ कात्यायनी के चरणों में अपना सर्वस्व निवेदित कर देता है। परिपूर्ण आत्मदान करने वाले ऐसे भक्त को सहज भाव से माँ कात्यायनी के दर्शन प्राप्त हो जाते हैं।

सप्तमं कालरात्रीति

माँ दुर्गा की सातवीं शक्ति कालरात्रि के नाम से जानी जाती है। दुर्गा पूजा के सातवें दिन माँ कालरात्रि की पूजा व आराधना की जाती है। इस दिन साधक का मन सहस्रार चक्र में स्थित रहता है। उसके लिये ब्रह्मांड की समस्त सिद्धियों का द्वार खुलने लगता है। इस चक्र में स्थित होकर साधक का मन पूर्णत: माँ कालरात्रि के स्वरूप में अवस्थित रहता है। उनके साक्षात्कार से मिलने वाले पुण्य का वह भागी हो जाता है। माँ कालरात्रि दुष्टों का नाश करने वाली हैं। ये ग्रह-बाधाओं को भी दूर करने वाली हैं। इनकी कृपा से भक्त सर्वथा भय मुक्त हो जाता है। माँ कालरात्रि के स्वरूप विग्रह को अपने हृदय में अवस्थित करके मनुष्य को एकनिष्ठ भाव से उनकी आराधना करनी चाहिये। यम, नियम, संयम का उसे पूर्ण पालन करना चाहिये। इनकी उपासना से होने वाले शुभों की गणना नहीं की जा सकती।

महागौरीति आष्टमं

माँ दुर्गाजी की आठवीं शक्ति का नाम महागौरी है। नवरात्र के आठवें दिन इनकी पूजा का विधान है। इनकी शक्ति अमोघ और सद्यः फलदायिनी है। इनकी उपासना से भक्तों के सभी कल्मष धुल जाते हैं। पूर्वसंचित पाप भी विनष्ट हो जाते हैं। भविष्य में पाप-संताप, दैन्य-दुःख उसके पास कभी नहीं आते। वह सभी प्रकार से पवित्र और अक्षय पुण्यों का अधिकारी हो जाता है। माँ महागौरी का ध्यान-स्मरण, पूजन-आराधन भक्तों के लिये सर्वाधिक कल्याणकारी है। माँ महागौरी की कृपा से अलौकिक सिद्धियों की प्राप्ति होती है। मन को अनन्यभाव से एकनिष्ठ कर मनुष्य को सदैव इनके ही पादारविंदों का ध्यान करना चाहिये। ये भक्तों के कष्ट अवश्य दूर करती हैं। इनकी उपासना से आर्तजनों के असंभव कार्य संभव हो जाते हैं। अतः इनके चरणों की शरण पाने के लिये हमें सर्वाधिक प्रयत्न करना चाहिये। ये मनुष्य की वृत्तियों को सत् की ओर प्रेरित करके असत् का विनाश करती हैं। हमें प्रपत्ति भाव से इनका शरणागत बनना चाहिये।

नवमं सिद्धिदात्री

माँ दुर्गाजी की नवीं शक्ति चार भुजाधारी सिद्धिदात्री है। ये सभी प्रकार की सिद्धियों को देने वाली है। इनका वाहन सिंह है। ये कमल पुष्प पर भी आसीन होती हैं। इनके दाहिनी तरफ के नीचे वाले हाथ में चक्र, ऊपरवाले हाथ में गदा तथा बायीं तरफ के नीचे वाले हाथ में शंख और ऊपर वाले हाथ में कमलपुष्प है।

नवरात्र पूजन के नवें दिन इनकी उपासना की जाती है। इस दिन शास्त्रीय विधि-विधान और पूर्ण निष्ठा के साथ साधना करने वाले साधक को सभी सिद्धियों की प्राप्ति होती है। सृष्टि में कुछ भी उसके लिए अगम्य नहीं रह जाता। ब्रह्मांड पर पूर्ण विजय प्राप्त करने का सामर्थ्य उसमें आ जाता है। नव दुर्गाओं में माँ सिद्धिदात्री अंतिम स्वरूप हैं। अन्य आठ दुर्गाओं की पूजा-आराधना शास्त्रीय विधि-विधान के अनुसार करते हुए भक्त दुर्गा पूजा के नवें दिन इनकी उपासना में प्रवृत्त होते हैं।

सिद्धिदात्री माँ की उपासना पूर्ण कर लेने के बाद ही भक्तों और साधकों की लौकिक-पारलौकिक सभी प्रकार की कामनाओं की पूर्ति हो जाती है। माँ भगवती का स्मरण, ध्यान, पूजन हमें वास्तविक परम शांतिदायक अमृत पद की ओर ले जाने वाला है।

Wish You a Happy Navratri

Shreenath® Travellers

Vipin Sharma
Director

Head Office : 9, Kan Nagar, Main Road, Near Sub City Center
Udaipur Ph. : 0294 - 2488333, 2489555

Daily Parcel Service Available

Udaipur : 3, Yatri Hotel Udaipole, Udaipur 313 001
Ph. : 0294 - 2423181, 2423182

Fatehpura, Udaipur (Rameshwar)
Shreenath Travellers, Fatehpura
Ph. : 09571210045

फूलों की वादियों में महकता कुल्लू

✍ मीनू गुप्ता

कुल्लू (हिमाचल प्रदेश) मनोरम और खूबसूरत पर्यटन स्थलों में एक है। समुद्र तल से इसकी ऊंचाई 1219 मीटर है। व्यास नदी के किनारे बसे इस रमणीय स्थल की स्वास्थ्यवर्द्धक जलवायु प्रतिवर्ष हजारों पर्यटकों को आकर्षित करती है। यहां का अनूठा दशहरा देखने लायक है। इसकी खासियत यह है कि जब बाकी देश में इस पर्व का समापन होता है, तब यहां इसका आरंभ होता है। कुल्लू नगर को 3 भागों में बांटा जा सकता है। ढालपुर मैदान, जहां प्रसिद्ध दशहरा पर्व मनाया जाता है - ढालपुर बाजार व अखाड़ा बाजार। वसंतु ऋतु में हर दिन श्रद्धालु पहुंचते हैं।

रायसन

यह एक मनोहारी पिकनिक स्थल है। कुल्लू शहर से इसकी दूरी लगभग 13 किलोमीटर है। समुद्र तल से इसकी ऊंचाई लगभग 1,443 मीटर है। व्यास नदी के किनारों पर बसे रायसन के चारों ओर सेब, बेर व खूबानी के खूबसूरत बगीचे हैं। यहां के रंग-बिरंगे फूल भी पर्यटकों को अपनी ओर शिविर और रैलियां आयोजित की जाती हैं।

देव टिब्बा

प्राकृतिक सौंदर्य से ओत-प्रोत यह स्थल समुद्र-तल से 2,953 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। यह स्थान धार्मिक मान्यताओं के लिए प्रसिद्ध है।

अप्रैल से जून और सितम्बर से नवम्बर तक का समय कुल्लू जाने के लिए उपयुक्त रहता है। वैसे कुल्लू जाने का सबसे अच्छा समय अक्तूबर में होने वाले कुल्लू के प्रसिद्ध दशहरे के त्योहार के अवसर पर है। इस समय कुल्लू नगर एक बड़े मेले के का रुप धारण कर लेता है। इस दौरान एक सप्ताह तक कुल्लू के विभिन्न गांवों से आए। युवक-युवतियां आकर्षक लोकनृत्य पेश करते हैं।

लारजी

कुल्लू से 34 किलोमीटर दूरी पर स्थित लारजी भौंकने वाले कस्तूरी मृग, चीतों व जंगली सूअरों के लिए प्रसिद्ध है। यहां सैंज व तीरथन नदियों का संगम भी देखने लायक है।

नग्गर

किसी समय कुल्लू रियासत की राजधानी रहा नग्गर अपने एक पुराने किले के लिए प्रसिद्ध है। यहां कई मंदिर भी हैं, जो देखने योग्य हैं। इस जगह पर कार व जीपों द्वारा आसानी से पहुंचा जा सकता है।

बजौरा

कुल्लू से 15 किमी दूर इस स्थान पर रंग-बिरंगे फूल, देवदारों से घिरे रास्ते, खूबानी और बेर से लदे वृक्ष कुल्लू के सौंदर्य में चार-चांद लगा देते हैं। पैदल यात्रा के शौकीनों के लिए कुल्लू काफी अच्छी जगह है। बहुत से पैदल यात्री कुल्लू से ही अपनी पर्यटन यात्रा आरंभ करते हैं।

रघुनाथ मंदिर

कुल्लू से लगभग 17 किमी दूर यह मंदिर कुल्लू निवासियों का एक महत्त्वपूर्ण धार्मिक स्थल है।

वैष्णो देवी मंदिर

यह मंदिर कुल्लू से 4 किलोमीटर की दूरी पर एक छोटी सी गुफा में बना है। इस मंदिर में माता वैष्णो देवी की आराधना एवं दर्शन करने के लिए आकर्षित करते हैं।

कसौल

पार्वती नदी के किनारे और कुल्लू से 42 किलोमीटर दूर यह पिकनिक मनाने का बेहतर स्थल है। यहां नदी का पानी इतना साफ होता है कि उसकी सतह भी दिखाई देती है। यहां ट्राउट मछली के शिकार की सुविधा उपलब्ध हैं।

भुंतर

यह एक कस्बा है, जहां एयरपोर्ट स्थित है। ड्रिफ्टवुड आर्ट गैलरी के कारण भी भूंतर प्रसिद्ध है। यह कुल्लू से मात्र 8 किलोमीटर की दूरी पर है। यहां की काष्ठ कलाकृतियां बहुत मशहूर है। कुल्लू से 6 मील दूर गांव समसी सर्दियों में काम आने वाली गर्म शॉल के लिए प्रसिद्ध है।

कैंपिंग साइट

यह मनोरम पिकनिक स्थल कुल्लू से 16 किलोमीटर की दूरी पर है। समुद्र-तल से इसकी ऊंचाई लगभग 1,433 मीटर है। यहां फलों के बागान दूर-दूर तक फैले हुए हैं। यहां बशेश्वर महादेव मंदिर हैं। पिरामिड आकार का यह कलात्मक मंदिर पत्थरों पर उकेरी गई कलाकृतियों के लिए प्रसिद्ध है। इस मंदिर का निर्माण 8वीं सदी के मध्य में हुआ था।

मणिकर्ण

पार्वती घाटी की बर्फ की चोटियों की तलहटी में बसा यह स्थान अपने गर्म पानी के चश्मों के लिए प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि इन चश्मों के पानी में कई औषधीय गुण हैं। कुल्लू से इसकी दूरी लगभग 44 किलोमीटर है।

बंजार

बंजार एक बेहद खूबसूरत दर्शनीय स्थल है। कुल्लू से इसकी दूरी लगभग 58 किलोमीटर है। यह स्थल ट्राउट नामक मछलियों के शिकार के लिए प्रसिद्ध है, पर इसके लिए मत्स्य विभाग की अनुमति लेना अनिवार्य है।

केशधार

कुल्लू से मात्र 15 किलोमीटर दूर ये स्थल अपने हरे-भरे व लंबे-चौड़े चारागाहों के लिए प्रसिद्ध है। यहां ठहरने के लिए वन-विभाग का विश्राम-गृह भी है।

बशाड़

यह स्थल कुल्लू से 67 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। पर्यटक यहां के प्राकृतिक नजारों एवं वन्य जीवन का भरपूर आनंद उठाने के लिए यहां आते हैं।

कटराई

ब्यास नदी के किनारों पर बसा यह बेहद मनमोहक पिकनिक स्थल है। कुल्लू से इसकी दूरी 18 किलोमीटर है तथा समुद्र-तल से इसकी ऊंचाई 1,463 मीटर है।

जिलों के प्रभारी मंत्री बदले

जयपुर। राज्य सरकार ने अपने अधिकतर मंत्रियों के प्रभार वाले जिलों में बदलाव किया है। मुख्यमंत्री ने अपने गृह जिले जोधपुर में उपमुख्य सचेतक महेन्द्र चौधरी को लगाया है। जबकि पूर्व उपमुख्यमंत्री सचिन पायलट के विधानसभा क्षेत्र टोंक में चिकित्सा मंत्री रघु शर्मा को जिम्मेदारी दी गई है। वे भीलवाड़ा प्रभारी भी होंगे।

प्रतापसिंह

उदयपुर में प्रतापसिंह खाचरियावास जिला प्रभारी होंगे। बी. डी. कल्ला-श्री गंगानगर व हनुमानगढ़, परसादीलाल मीणा-बूंदी-सवाईमाधोपुर, लालचंद कटारिया-अजमेर-कोटा, गोविन्द सिंह डोटासरा-बीकानेर, प्रमोद जैन भाया-जालोर-सिरोही, हरीश चौधरी-नागौर, शाले मोहम्मद-पाली, अर्जुन बामणिया-चित्तौड़गढ़-प्रतापगढ़, भंवर सिंह भाटी-चुरू, सुखराम विश्नोई-बाड़मेर-जैसलमेर, अशोक चान्दना-करौली-दौसा, टीकाराम जूली-झालावाड़-बारां, भजनलाल जाटव-धोलपुर, महेश जोशी-भरतपुर और सुभाष गर्ग-झुंझुनू-सीकर के प्रभारी होंगे। शांति धारीवाल-जयपुर, भूपेश-अलवर, उदयलाल आंजना-राजसमन्द और राजेन्द्र सिंह यादव पहले की तरह बांसवाड़ा-डूंगरपुर के प्रभारी बने रहेंगे।

बड़े पर्दे के चर्चित चेहरे

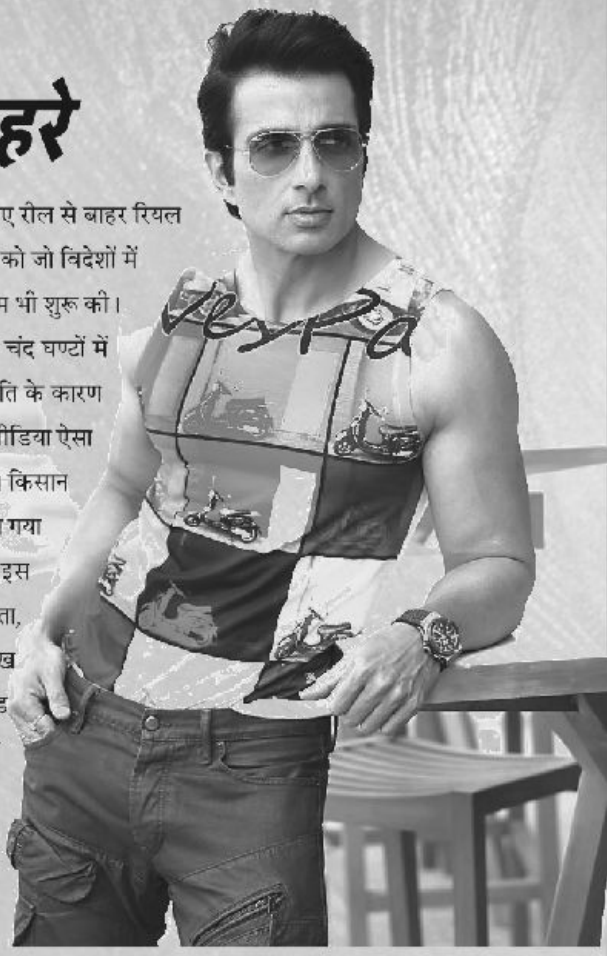

पर्दे पर विलन का किरदार निभाने वाले अभिनेता सोनू सूद पिछले कुछ महीनों से लोगों के लिए रील से बाहर रियल लाइफ के भी हीरो बन गए हैं। पहले हजारों गरीब प्रवासी मजदूरों और सैकड़ों उन विद्यार्थियों को जो विदेशों में अध्ययनरत थे, लॉकडाउन के दौरान उनके घर पहुंचाया फिर उनके रोजगार के लिए एक मुहिम भी शुरू की। जुलाई में उन्होंने आंधप्रदेश के चित्तूर जिले के महालराजुवारी गांव के एक गरीब किसान को चंद घण्टों में ट्रेक्टर मुहैया करवा दिया। जैसे ही उन्हें यह पता चला कि किराए से भी बैल न लेने की स्थिति के कारण किसान अपनी बेटियों को खेत की जुताई के लिए हल में इस्तेमाल कर रहा है। उन्होंने सोशल मीडिया ऐसा वीडियो देखा और अगले ही दिन सुबह तो किसान के खेत पर ट्रेक्टर ही खड़ा करवा दिया। किसान नागेश्वर राव को जब सोनू के इस जरूरी तोहफे के बारे में बताया गया तो उसकी आंखों से आंसू छलक पड़े। वह बोला - 'इस मदद के लिए उन्हें कैसे धन्यवाद दूं।' पत्नी ललिता, बेटिया वेनेला व चंदना की आंखें भी ट्रेक्टर को देख छलछला आईं। बॉलीवुड का यह सितारा टॉलीवुड में भी काफी लोकप्रिय हैं। उन्हें एक दशक पहले रिलीज हुई तेलुगु ब्लॉकबस्टर फिल्म 'अरुंधति' में खलनायक के रूप में खासी पहचान मिली। पता चला है कि सोनू अब 20 हजार गरीब प्रवासी मजदूर परिवारों के लिए घर का इन्तजाम करने में जुटे हैं।

अक्षय ने बाढ़ पीड़ितों को दिए एक करोड़

खिलाड़ियों के खिलाड़ी कुमार अक्षय कुमार ने असम बाढ़ पीड़ितों की मदद के लिए एक करोड़ रुपये दिये हैं। वे आपदा में मदद के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। अक्षय ने कोरोना की लड़ाई में अपना योगदान देते हुए पीएम केयर्स फंड में बड़ा दान किया। इसके अलावा उन्होंने कोरोना वॉरियर्स की भी मदद की। अब असम बाढ़ पीड़ितों की मदद के लिए हाथ बढ़ाया है। बाढ़ पीड़ितों की मदद उन्होंने के लिए असम के मुख्यमंत्री सर्वानंद सोनोवाल ने अक्षय को धन्यवाद दिया है। उन्होंने अक्षय का शुक्रिया अदा करते हुए ट्वीट किया कि आपने हमेशा संकट के समय सहानुभूति और समर्थन दिया है।

निशाने पर आमिर

तुर्की में राष्ट्रपति रजब तैयब एर्दोगान की पत्नी एमी एर्दोगान के साथ अभिनेता आमिर खान की तस्वीरें वायरल होने के बाद यह बॉलीवुड एक्टर आरएसएस के निशाने पर है। संघ के मुख पत्र 'पांचजन्य' में उन्हें चीन की सत्ताधारी पार्टी का प्यारा भी कहा गया है। कहा गया कि 'दंगल' स्टार भारत विरोधी ताकतों से हिल-मिल रहे हैं। पांचजन्य में लिखा गया कि भारत में जब लोग किसी फिल्मी सितारे को बुलंदियों पर पहुंचाते हैं तो वो उसके मजहब को नहीं देखते। उसकी फिल्मों पर खूब पैसा लुटाते हैं। लोग उसके मजहब के नहीं बल्कि उसकी अदाकारी के प्रशंसक होते हैं। लेख में कहा गया, मगर तब क्या हो जब वही इंसान देशवासियों को ठेंगा दिखाते हुए उनके प्यार के बदले 'पहले मजहब फिर देश' की जिहादी सोच दिखाने लगे या दुश्मन देश के चंद पैसों पर कठपुतली सा चलने लगे, दुश्मन देश की मेहमाननवाजी पूरी बेशर्मी से कबूलने लगे? इसके लिए क्या देशवासी खुद को ठगा महसूस नहीं करेंगे? आजकल चीन और तुर्की के चहेते बने आमिर खान की इन्हीं सब बातों को लेकर उनके प्रशंसकों के साथ ही आम लोगों में गुस्सा दिख रहा है।

✍ संजय सांखला

Wish You a Happy Navratri

SAH POLYMERS LIMITED

(Manufacturer of HDPE/PP Laminated & Unlaminated Woven Fabric, Sacks and F.I.B.C.)

E-260-261, M.I.A., Madri, Udaipur - 313003
Ph. : 0294-2490242, 2493889, TeleFax : 0294-2490534
E-Mail : info@sahpolymers.com, Website : www.sahpolymers.com

विजय, विवेक और विभूति

पुण्य का उद्देश्य अगर अधिक से अधिक भोग को पा लेना है, तो भोग की प्राप्ति भले हो जाए, लेकिन रावण पर विजय नहीं मिलेगी।

✍ पं. राम किंकर उपाध्याय

विजय पर्व का अर्थ यह है कि भगवान श्रीराम की रावण पर जो विजय हुई, उसे हम किस दृष्टि से देखें? वास्तविक महत्व इसी का है। यों कहें कि जब वर-कन्या का विवाह शास्त्रीय विधि से मंडप में संपन्न होता है, तो उस अवसर पर चारों ओर कितने उत्साह और आनंद का वातावरण होता है। विवाह का उत्सव तो एक-दो दिनों के लिए ही होता है, परंतु उसकी परीक्षा तो सारे जीवन में होती है। विवाह के मंडप में जो प्रेरणा वर-वधू को प्राप्त होती है, यदि उसका समुचित निर्वाह और पालन होता है, तब तो विवाहोत्सव की सार्थकता है और यदि केवल बाजे बजा करके, गीत गा करके, स्वादिष्ट व्यंजनों का भोग लगा करके हम विवाह का आनंद लें, तो यह आनंद क्षणिक ही होगा। यही सत्य है। श्रीराम की रावण पर विजय का तात्पर्य क्या है?

लंकाकांड में इस विजय का वर्णन किया गया है, इसका अंतिम दोहा क्या है? श्रीराम के चरित्र का वर्णन करते हुए यह बताया गया है कि इस चरित्र का फल क्या है? लंकाकांड का फलादेश है -

समर बिजय रघुबीर के चरित जे सुनहिंत सुजान।
बिजय बिबेक बिभूति नित तिन्हहि देहिं भगवान।।

तीन वस्तुएं प्राप्त होती हैं विजय, विवेक और विभूति परंतु किसको? एक शब्द जोड़ दिया गया है कि जो सुजान हैं। रामायण का पाठ और श्रवण तो अनेक लोग करते ही रहते हैं, परंतु गोस्वामीजी ने जो 'सुजान' शब्द जोड़ दिया, यह बड़े महत्व का है। इस कथा को कहने वाला भी सुजान हो और सुनने वाला भी सुजान हो, यह गोस्वामीजी की शर्त है। यह सुजान शब्द कहां से जुड़ा हुआ है, इस पर ध्यान दीजिए। श्रीराम की जब रावण पर विजय हुई, तो देवताओं ने आकाश से पुष्प-वर्षा की और बधाई देने के लिए एकत्र हुए। उन्होंने कहा कि इस दुष्ट का वध करके आपने हम लोगों को धन्य कर दिया।

यह दुष्ट मारेउ नाथ, भए देव सकल सनाथ।

आश्चर्य यह था कि देवताओं की इस भीड़ में भगवान शंकर नहीं थे। वह क्यों नहीं आए? किसी देवता के मन में यह बात भी आ गई कि रावण तो भगवान शंकर का शिष्य था, शिष्य की मृत्यु पर भगवान शंकर को शोक हो गया होगा और इसी कारण बधाई देने नहीं आए। यहां गोस्वामीजी ने बड़ी मीठी बात लिखी और यहीं सुजान शब्द की व्याख्या की गई है -

सुमन बरषि सब सुर चले चढ़ि रुचिर बिमान।
देखि सुअवसर प्रभु पहि आयउ संभु सुजान।।

गोस्वामीजी यह लिखना नहीं भूले कि 'चढ़ि चढ़ि रुचिर बिमान।' देवताओं की जो मनोवृत्ति है, उनका ऐश्वर्य के प्रति जो आकर्षण है, वह उस वाक्य में परिलक्षित होता है। देवताओं की दृष्टि में वाहनों का बड़ा महत्व है, जो आज के समाज में भी है। किसी के बड़प्पन को आंकने में हम वाहनों की विशालता को देखते हैं। समृद्धि का मापदंड वाहन को मानने के हम भी अभ्यस्त हो गए हैं। वाहन तो एक साधन मात्र है, जो हमें किसी गंतव्य स्थान पर पहुंचाने का माध्यम है।

राम-रावण युद्ध में कई दिन बाद इंद्र ने अपना रथ(वाहन) भेजा और श्रीराम बड़ी प्रसन्नता से उस रथ पर बैठ गए, युद्ध के प्रारंभ में क्यों नहीं भेजा? इसके पीछे इंद्र की दो मनोभावनाएं हैं। इंद्र की ही नहीं, समाज में जितने भी देवता या देव-मनोवृत्ति के लोग होते हैं, वे यों तो पुण्य के पक्षपाती हैं, परंतु वे शंकालु होते हैं। इंद्र के मन में यह शंका है कि कहीं ऐसा तो नहीं होगा कि रावण ही जीत जाए। वह सदा रावण से हारते ही रहे हैं, इसलिए उनके लिए यह कल्पना करना कठिन होता है कि रावण को कोई हरा भी सकता है।

देवताओं के मन में श्री श्रीराम के ईश्वरत्व का ज्ञान सदा नहीं होता, क्योंकि श्रीराम की मनुष्य-लीला को देखकर वे उनके ईश्वरत्व को भूल जाते हैं। इंद्र के मन में आशंका है कि कहीं हमने प्रारंभ में ही रथ भेज दिया और रावण की जीत हो गई, तो फिर हमारी क्या दुर्दशा होगी?

इसलिए रथ भेजने मे विलम्ब किया। जब इंद्र ने यह देखा कि बिना रथ के भी श्रीराम की विजय हो रही है, तब इंद्र को लगा कि अब रथ न भेजना मूर्खता होगी, श्रीराम की विजय के इतिहास में हमारा नाम नहीं लिया जाएगा, इसलिए रथ भेज देना ही ठीक है।

होशंगाबाद में एक नवयुवक ने एक प्रश्न इस प्रसंग में मेरे सामने रखा कि यदि राम के स्थान पर मैं होता, तो लात मारकर रथ लौटा देता। मैंने उससे कहा कि भगवन राम और आप में यही अंतर है। अगर भगवान अपनी शरण में आने वाले व्यक्तियों के पूर्व कर्मों का लेखा-जोखा करने लगे, तो फिर बिरले ही व्यक्ति भगवान की शरणगति के अधिकारी हो पाएंगे। भगवान की करुणा तो यही है कि वह ये नहीं पूछते कि अभी तक क्यों नहीं आए? महत्व इसका है कि आज तो यह व्यक्ति आ गया, यदि इसी क्षण में इस मनोवृत्ति का उदय हो गया, तो प्रभु घोषणा करते हैं कि -

जैं नर होइ चराचर द्रोही।
आवै सभय सरन तकि मोही।।
तजि मद मोह कपट छल नाना।
करऊं सद्य तेहि साधु समाना।।

भगवान की यही करुणा है। यह ठीक है कि राम को रथ की आवश्यकता नहीं थी, वह बिना रथ के ही रावण को जीत लेते, लेकिन यदि वह इंद्र के रथ को लौटा देते, तो इसका अर्थ होता कि इंद्र के अहंकार का उत्तर अहंकार से दिया गया। भगवान ने रथ स्वीकार करके यह बताया कि मनुष्य में जिस क्षण में सद्वृत्ति का उदय हो, सद्भाव और विवेक का उदय हो और वह अपनी वस्तुएं भगवान के प्रति समर्पित करे, वही क्षण धन्य है।

इंद्र का रथ पुण्य का रथ है, धर्म का रथ है, क्योंकि इंद्रपद प्राप्त ही होता है पुण्य और धर्म के परिणामस्वरूप। इसी रथ पर बैठकर इंद्र ने कई बार रावण से युद्ध किया, पर सर्वदा हारा। उसी रथ को उसने भगवान के पास भेजा। यह बड़े महत्व का संकेत सूत्र है कि सद्गुणों और पुण्य के बिना कोई व्यक्ति दुर्गुणों और पाप को पूरी तरह से मिटा सकता है या हरा सकता है क्या? अर्थात नहीं। इंद्र की और इंद्र के रथ की जो पराजय है, वह इसी सत्य को प्रकट करने वाली है कि संसार के सभी पुण्यात्मा लोग यह समझते हैं कि पुण्य का उद्देश्य जीवन में अधिक से अधिक भोगों को पा लेना ही है, स्वर्ग को प्राप्त कर लेना ही है। पर ऐसे में हम स्वाभाविक रूप से स्वर्ग और भोग को ही प्राप्त कर सकेंगे, रावण पर विजय नहीं। तब कोई कह सकता है कि पुण्य और धर्म व्यर्थ है?

(रामायणम् ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित पुस्तक से साभार)

Wish You a Happy Navratri

Dharmendra Mandot
Director

Dulux

NAKODA
PAINTS & DECOR

THE TRUE COLOUR SHOP

100 Feet Road, Near SBI Bank, Opp. Ashoka Palace, Shobhagpura, Udaipur 313 004
Mob. : 98281 40456, E-mail : nakodapaints.udr@gmail.com

भंवरलाल खटीक
एम.डी.
94141-67281

हेमेन्द्र खटीक
डायरेक्टर
9887111453

धर्मेश खटीक
डायरेक्टर
9829511888

0294-2522108 (ऑफिस)
0294-2416281 (निवास)

प्रगति रियल मार्ट प्राइवेट लिमिटेड
भंवर सेवा संस्थान
स्व. सुशीला देवी खटीक चेरिटेबल ट्रस्ट

7, गुलाबेश्वर मार्ग, गली नम्बर 5, हाथीपोल, उदयपुर (राज.)

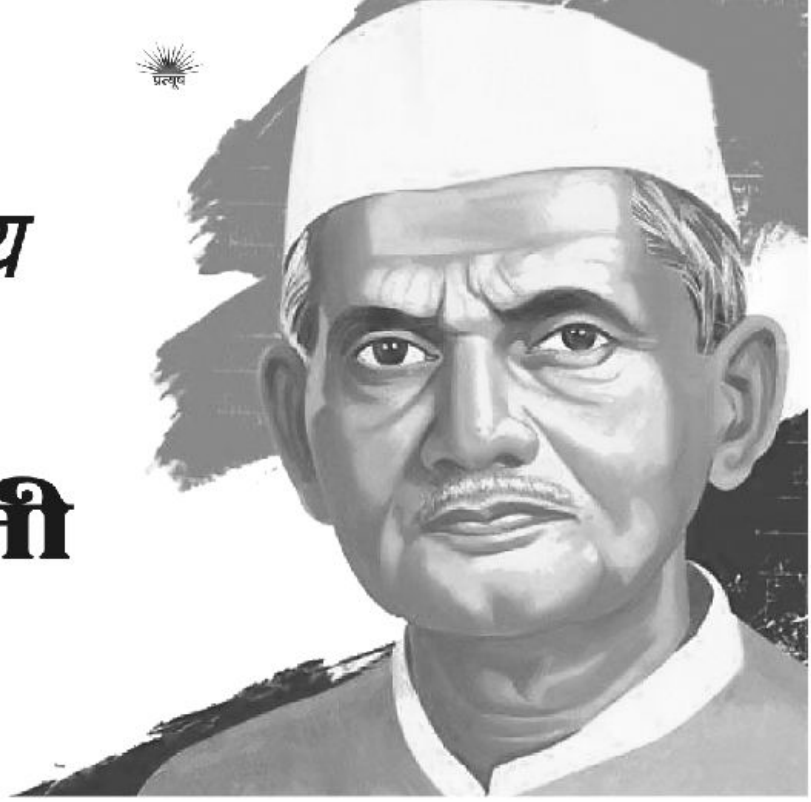

सरल-सौम्य राजनेता शास्त्रीजी

✍ मदन पटेल

भारत के दूसरे प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की 2 अक्टूबर को 116वीं जयंती है। लाल बहादुर शास्त्री ने स्वतंत्रता संग्राम में अहम रोल अदा किया, उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री रहे और 1964 में देश के दूसरे प्रधानमंत्री बने। 1966 में पाकिस्तान के साथ युद्ध में उनके निर्णयों की वजह से भारत ने पाकिस्तान को मार भगाया था। उनके व्यक्तित्व की खास बात थी सादगी, उच्च विचार और शिष्टाचार। उनका जन्म 2 अक्टूबर 1904 को उत्तरप्रदेश के मुगलसराय में हुआ। शास्त्री गांधीजी के विचारों और जीवनशैली से बेहद प्रेरित थे। उन्होंने स्वतंत्रता आन्दोलन में गांधीवादी विचारधारा का अनुसरण करते हुए देश की सेवा की और आजादी के बाद भी अपनी निष्ठा और सच्चाई में कमी नहीं आने दी।

भारत की स्वतंत्रता के पश्चात शास्त्री को उत्तर प्रदेश के संसदीय सचिव के रूप में नियुक्त किया गया था। वो गोविन्द वल्लभ पंत के मुख्यमंत्रित्व के कार्यकाल में यातायात मंत्री बने। वे बाद में जवाहर लाल नेहरू के केन्द्रीय मंत्रिमंडल में भी शामिल रहे। जवाहरलाल नेहरू का 27 मई, 1964 को देहावसान हो जाने के बाद शास्त्री ने 9 जून 1964 को प्रधानमंत्री का पद भार ग्रहण किया। शास्त्री का प्रधानमंत्री पद कार्यकाल राजनैतिक सरगर्मियों से भरा और तेज गतिविधियों का काल था। पाकिस्तान और चीन भारतीय सीमाओं पर नजरें गड़ाए खड़े थे तो देश के सामने कई आर्थिक समस्याएं भी थीं। लेकिन शास्त्री ने हर समस्या को बेहद सहज तरीके से हल किया। किसानों को अन्नदाता मानने वाले और देश के सीमा प्रहरियों के प्रति उनके अपार प्रेम ने हर समस्या का हल निकाल दिया। 'जय जवान, जय किसान' नारे के साथ उन्होंने देश को आगे बढ़ाया। जिस समय वह प्रधानमंत्री बने उस साल 1965 में पाकिस्तानी हुकूमत ने कश्मीर घाटी को भारत से छीनने की योजना बनाई थी। लेकिन शास्त्री ने दूरदर्शिता दिखाते हुए पंजाब के रास्ते लाहौर में सेंध लगा पाकिस्तान को पीछे हटने पर मजबूर कर दिया। इस हरकत से पाकिस्तान की विश्व स्तर पर बहुत निंदा हुई। पाक हुक्मरान ने अपनी इज्जत बचाने के लिए तत्कालीन सोवियत संघ से संपर्क साधा। जिसके आमंत्रण पर शास्त्रीजी 1966 में पाकिस्तान के साथ शांति समझौता करने के लिए ताशकंद गए। इस समझौते के तहत भारत-पाकिस्तान के वे सभी हिस्से लौटाने पर सहमत हो गया जहाँ भारतीय फौज ने विजय के रूप में तिरंगा झंडा गाड़ दिया था।

इस समझौते के बाद दिल का का दौरा पड़ने से 11 जनवरी 1966 को ताशकंद में ही शास्त्रीजी का निधन हो गया।

नींव का पत्थर

आप अखबारों से दूर क्यों रहते हैं? अपना नाम प्रकाशित करवाने से गुरेज क्यों करते हैं? लाल बहादुर शास्त्री से एक दिन उनके एक अभिन्न मित्र ने पूछ लिया। उन दिनों सर्वेन्ट्स ऑफ इण्डिया सोसायटी के मेम्बर थे। शास्त्री को इस सोसायटी में लाने वाले लाला लाजपतराय थे। शास्त्री ने अपने मित्र का प्रश्न सुनकर कहा, जब मेरा इस सोसायटी में प्रवेश हुआ था, तब लालाजी ने कहा था कि लाल बहादुर! आगरा का ताजमहल देखा है न? इसमें संगमरमर का पत्थर लगा है। इसी से इस भवन की शोभा है और लोग इसकी तारीफ करते नहीं थकते... मगर इसे संभालने वाले, इसका भार सहन करने वाले भी पत्थर ही हैं, जो नींव में दबे पड़े हैं। उनकी कभी किसी ने प्रशंसा नहीं की। यह कहते हुए शास्त्रीजी ने अपनी बात आगे बढ़ाई, और मैं भी नींव का पत्थर बन, बिना चर्चा में आए अपना कर्त्तव्य पूरी तरह निभाना चाहता हूं। एक सदस्य होने के नाते मुझे जो भी कार्य सौंपा जाएगा, उसे सहर्ष पूरा करूंगा.... इसी में मुझे, मेरे मन को शांति मिलती है... यही मेरी इच्छा भी है।

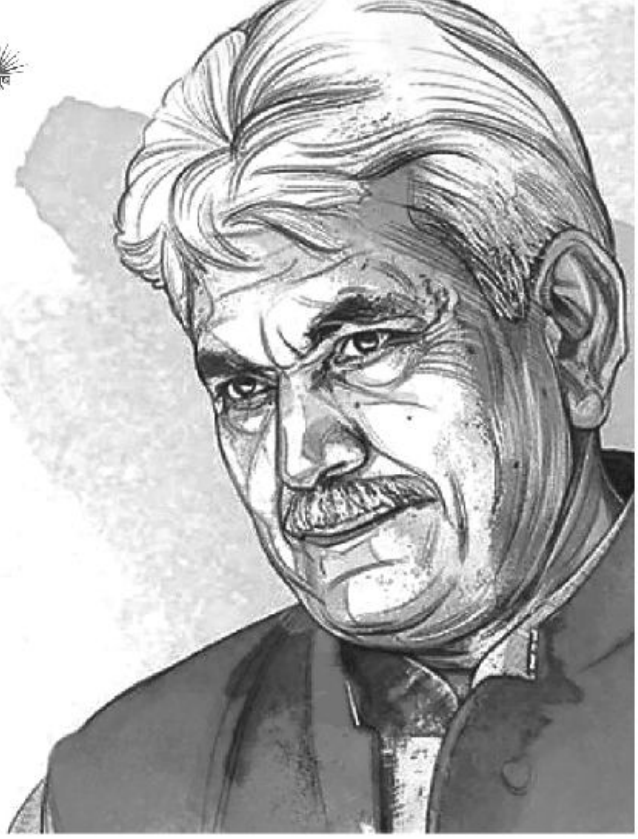

मनोज सिन्हा जमीनी बदलाव की बड़ी जिम्मेदारी

✍ सनत जोशी

मनोज सिन्हा भले ही अनुच्छेद 370 हटने के बाद जम्मू-कश्मीर के दूसरे उपराज्यपाल हैं लेकिन राजनैतिक पृष्ठभूमि से वे पहले उपराज्यपाल हैं। पूर्व उपराज्यपाल गिरिश चन्द्र मुर्मू आईएएस अधिकारी रहे हैं। सिन्हा के समक्ष अपनी राजनैतिक सूझबूझ से सूबे में नए बदलाव की अहम चुनौती है। कश्मीर को लेकर केन्द्र सरकार ने तीन प्राथमिकताएं तय की हैं। एक, वहां विकास हो, जिससे बदलाव होता हुआ दिखे भी। दूसरे, वहां जमीनी स्तर पर हालात चुनाव के अनुकूल हों तथा तीसरे, आतंक का खात्मा हो। पहले दो मोर्चों पर सिन्हा की भूमिका ज्यादा महत्वपूर्ण होगी। बदलाव होगा तो आतंकवाद भी खत्म होने लगेगा।

उपराज्यपाल के रूप में वे राज्य के सर्वेसर्वा हैं, इसलिए उन्हें विधानसभा चुनाव तक एक जनप्रतिनिधि की भूमिका भी निभानी होगी। उन्हें राजनीति का लम्बा अनुभव है। जनता की नब्ज पहचानने में माहिर हैं। ऐसे में उम्मीद है कि वे सूबाई अवाम, सक्रिय सामाजिक संगठनों, राजनैतिक समूहों और नौकरशाही को विश्वास में लेकर अपनी राजनैतिक समझ का इस्तेमाल करेंगे। 5 अगस्त, 2020 को गिरिशचन्द्र मुर्मू के इस्तीफा देने के बाद 7 अगस्त 2020 को केन्द्र सरकार के आदेश पर सिन्हा ने श्रीनगर में पद और गोपनीयता की शपथ ली। मुर्मू को 6 अगस्त को नियंत्रक और महालेखा परीक्षक(कैग) नियुक्त किया गया। शपथ के बाद सिन्हा ने अपने सम्बोधन में कहा कि - **'5 अगस्त, 2019 का दिन जम्मू-कश्मीर के इतिहास में खास दिन के रूप में दर्ज है। कई वर्षों के अलगाव के बाद यह राज्य राष्ट्रीय मुख्यधारा में शामिल हुआ। जो काम वर्षों तक नहीं हुए वे पिछले एक साल में यहां हुए। मैं विकास की इस धारा को गति देने का भरसक प्रयत्न करूंगा।'**

सिन्हा को जिन अहम मुद्दों पर काम करना है, उनमें नौकरशाही में व्याप्त गुटबाजी समाप्त करना, राज्य के खुफिया तंत्र की सुस्ती उड़ाना, राजनैतिक कार्यकर्त्ताओं पर हो रहे हमलों पर अंकुश और चुनावों की भावभूमि तैयार करना शामिल है। मुर्मू ने घाटी में कानून व व्यवस्था के मोर्चे पर बेहतरीन काम किया। जब उन्होंने पद संभाला था, तब घाटी में संगीनों के साये में तनाव ही तनाव पसरा था और वातावरण एक डरावनी सी खामोशी ओढ़े हुए था। उनकी प्रशासनिक क्षमता और सूझबूझ के कारण न कोई बड़ी आतंकवादी वारदात हुई और न ही खुले तौर पर सामाजिक प्रतिरोध सामने आया। इसकी वजह यह भी थी कि कश्मीर की जनता सीमा पार से आतंक के आयात से तंग आ चुकी थी।

अमन पसंद लोग धारा 370 के हटने और मुख्य धारा में शामिल होने पर मन ही मन खुश थे। जनमानस की इस शांत प्रतिक्रिया से पत्थरबाज दड़बों में जा छिपे। मुर्मू को जो फौरी काम निपटाने थे, उन्हें बाखूबी निपटा कर वे दूसरी जिम्मेदारी के निर्वाह के लिए दिल्ली लौट गए। अब बारी मनोजजी की है और चूंकि वे राजनैतिक व्यक्ति हैं, अत: उनसे उम्मीद की जा रही है कि वे राजनैतिक माहौल को जीवन्त बनाएं। काम कठिन है। मेहबूबा मुफ्ती सहित राज्य के कुछ नेता अभी भी नजरबंद हैं। केन्द्र का यह भी मानना है कि पूर्व मुख्यमंत्री फारूख अब्दुल्ला और उनके बेटे उमर अब्दुल्ला और मुफ्ती खानदान चुक चुके हैं, अब जम्मू-कश्मीर को नई राजनीति और राजनीतिज्ञों की जरूरत है। यहां समस्याएं सिर्फ सियासी ही नहीं हैं, चूंकि यह सूबा लम्बे समय तक दहशतगर्दी का शिकार रहा है, अतएव यहां आर्थिक समस्याएं भी मुंह बाए खड़ी हैं। हालांकि व्यापक स्तर पर चल रहे विकास कार्यों से इस समस्या को हल होना ही है, भले ही थोड़ा वक्त लगे। ऐसे में युवाओं को राजनैतिक धारा में शामिल करना भी बहुत बड़ा काम है। छात्र-समुदाय को अपनी कार्य शैली से प्रभावित करना होगा और रोजगार का बेहतर रोडमेप तैयार करते हुए वहां के पर्यटन को प्राण वायु से पुन: जीवंत करना होगा।

पूर्वांचल के विकास पुरुष

मनोज सिन्हा का सियासी सफर बीएचयू छात्रसंघ से शुरू हुआ। तीन बार सांसद निर्वाचित हुए और पिछली मोदी सरकार में रेल राज्यमंत्री बने। 2017 के यूपी विधानसभा चुनाव में भाजपा की प्रचंड जीत पर मुख्यमंत्री के प्रबल दावेदार माने जा रहे थे। हालांकि अंतिम समय में भाजपा ने योगी आदित्यनाथ को जिम्मेदारी दे दी।

मोदी के पिछले कार्यकाल में रेल राज्यमंत्री के रूप में मनोज सिन्हा ने पूर्वांचल के विकास को गति देने का भरपूर प्रयास किया। अपनी कार्यशैली की वजह से वह नरेन्द्र मोदी के विश्वसनीय नेताओं में शामिल हैं।

बेदाग छवि को देख भाजपा ने लगातार दूसरी बार गाजीपुर लोकसभा सीट पर चुनाव लड़ने का मौका दिया। हालांकि कुछ सियासी समीकरणों और कुछ संसदीय क्षेत्रों के नए परिसीमन की वजह से वह चुनाव नहीं जीत सके। उनके कार्यों की वजह से उन्हें राज्यसभा में भेजकर मंत्रालय देने के कयास थे। केन्द्र में दूसरी बार भाजपा की सरकार बनने के साल भर बाद ही जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद 370 हटने के ठीक एक वर्ष के बाद उन्हें दूसरा उपराज्यपाल बनाया गया। मनोज सिन्हा के लिए जम्मू-कश्मीर की सियासत और सरकार के बीच सामंजस्य बनाने की बड़ी चुनौती है।

1996 से लेकर 2020 तक के 24 सालों के राजनीतिक सफर में उन्होंने कई उतार-चढ़ाव देखे हैं।

साधारण परिवेश से बुलंदी तक

गाजीपुर के मोहनपुरा में प्रिंसिपल वीरेन्द्र सिंह के घर एक जुलाई 1959 को जन्मे सिन्हा की प्राथमिक शिक्षा गांव में हुई। गणित और विज्ञान में मेधावी होने से राजकीय सिटी इंटर कॉलेज में 12वीं(विज्ञान वर्ग) में दाखिला मिला। वह एबीवीपी से जुड़े। इंटर पास किया और आईटी बीएचयू में दाखिला लिया। यहीं पर छात्र राजनीति में कदम रखा।

हर ठहराव के बाद दमदारी वापसी

बीएचयू छात्रसंघ से शुरू मनोज सिन्हा के सियासी सफर में कई बार ऐसा समय आया, जब लगा कि उनके करियर पर विराम लग जाएगा, लेकिन ऐसा कभी नहीं हुआ। 1998 में लोकसभा चुनाव में हार के साथ चर्चाएं शुरू हो गईं लेकिन 13 माह बाद ही जबर्दस्त वापसी की। वहीं 2004 में भी संसदीय चुनाव हार के बाद सियासी सफर में उतार-चढ़ाव आए लेकिन 2014 में फिर सफलता हासिल की। कुछ ऐसी ही इबारत 2019 की हार के बाद मनोज सिन्हा ने लिखी। इस बार वह भाजपा के लिए सबसे महत्वपूर्ण राज्य जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल बनाए गए। सिन्हा के सियासी सफर में 2019 लोकसभा का चुनाव पहला मौका नहीं था जब उन्हें हार का सामना करना पड़ा। लेकिन इस बार भी उन्होंने पहले की ही तरह वापसी की। गाजीपुर में सिन्हा के लिए पूर्व पीएम अटलबिहारी वाजपेयी से लेकर कल्याण सिंह और अब पीएम मोदी से अमित शाह तक ने चुनाव प्रचार किया। सांसद से मंत्री और अब उपराज्यपाल बने सिन्हा की कार्यशैली बोलती है कि हां मैं ही मनोज सिन्हा हूं।

सियासी सफर

1982 में बीएचयू में छात्रसंघ के अध्यक्ष बने, बीटेक के छात्र थे।

1996 में गाजीपुर लोकसभा से पहली बार चुनाव जीतकर लोकसभा पहुंचे।

1998 का लोकसभा चुनाव हारे लेकिन 13 महीने के बाद फिर सांसद बने।

1999 में लोस चुनाव जीत फिर संसद पहुंचे थे।

2004 और 2009 में सिन्हा को लोकसभा चुनाव में हार का सामना करना पड़ा।

2014 लोकसभा चुनाव में तीसरी बार मोदी लहर पर सवार होकर संसद पहुंचे।

2019 के लोकसभा चुनाव में गाजीपुर से एक बार फिर हार का सामना करना पड़ा।

06 अगस्त 2020 को एलजी के रूप में घोषणा।

कविता

लॉकडाउन की हर शाम

लॉकडाउन की हर शाम।
अपनी टूटी हड्डियों की
कलम बनाकर
खून के अक्षरों से
एक चिट्ठी लिखता हूँ
लॉकडाउन की हर शाम
कुछ देने का झूठा वादा कर
डाकिये से मिल,
उसे अपने ही हाथ से
डाक की थैली में
डाल आता हूँ,
लॉकडाउन की हर शाम,
भविष्य के खयालों को
फटी चप्पलों से कुचलकर,
डाकखाने में
दाखिल हो जाता हूँ
लॉकडाउन की हर शाम,
सभी सजे सपनों को
नरे साँपों की तरह,
प्रतीक्षा के लम्बे बाँसों से
कुचल देता हूँ
लॉकडाउन की हर शाम,
मैं यंत्रों की तरह रेंगता
किसी के बन्द किवाड़ों
की तरह बहरे
कानों तक पहुंच जाता हूं,
लॉकडाउन की हर शाम,
अपने मन के गुब्बारे को
किसी महफिल में
नाचते देखता हूँ...
जहाँ से वह
गुम हो जाता है,
लॉकडाउन की हर शाम,
मैं पूरे दिन की दास्ताँ
हर शाम कहने बैठता हूँ
जब...
आसमान के सितारे डूबकर
अँधेरे में बिखर जाते हैं।

✍ डॉ. जयप्रकाश भाटी 'नीरव'

HAPPY NAVRATRI

Darcl
Logistics

Darcl Logistic Limited

(Formerly known as Delhi Assam Roadways Corporation Limited)

Branch Office :
2nd Floor, 26-NB Complex, Ahmedabad Road, Pratap Nagar Chauraha, Udaipur (Raj.)
Tel. : +91-294-3296769, 3297688, Fax : +91-294-2494142
Email : surender.sharma@delhiassam.com | www.darcl.com

प्लाज्मा थेरेपी उपाय है, उपचार नहीं

कोरोना महामारी के चलते इन दिनों प्लाज्मा थेरेपी चर्चा में है। स्पेनिश फ्लू, इबोला व सार्स नामक वायरस रोगों के दौरान भी इसका इस्तेमाल किया गया था। कोरोना से ठीक हो चुके लोगों से प्लाज्मा डोनेट करने की अपील की जा रही है। इस थेरेपी को कोरोना से बचाव का बेहतर उपाय बताया जा रहा है।

✍ शिल्पा नागदा

भारत में इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च ने कई राज्यों को कोविड-19 से गंभीर रूप से पीड़ित मरीजों के लिए प्लाज्मा थेरेपी का इस्तेमाल करने की अनुमति दी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन(डब्ल्यूएचओ) का कहना है कि पुराने अनुभव के अनुसार आने वाले समय में प्लाज्मा थेरेपी कोविड-19 का एक प्रमुख उपचार बन सकती है। यह पैसिव इम्युनाइजेशन की तरह है। फिलहाल यह एक निवारक उपाय है, उपचार नहीं।

प्लाज्मा थेरेपी

प्लाज्मा रक्त का तरल भाग होता है, जिसमें लाल और श्वेत दोनों रक्त कणिकाएं और रंगहीन प्लेटलेट्स होते हैं। इसी में एंटीबॉडीज भी तैरती रहती हैं। इसीलिए इसे एंटीबॉडी थेरेपी भी कहा जाता है। इस थेरेपी में एक व्यक्ति के शरीर में उन एंटीबॉडीज को पहुंचाया जाता है, जो किसी दूसरे व्यक्ति के शरीर में उस बीमारी से ठीक होने के दौरान बनी हैं। जो लोग ठीक हो चुके हैं, उनसे जो प्लाज्मा लिया जाता है, उसे कोन्वालेसेंट प्लाज्मा कहते हैं। इसे उन लोगों के शरीर में ट्रांसफर किया जाता है, जो गंभीर संक्रमण से जूझ रहे हैं या जिनके लिए संक्रमण की चपेट में आने का खतरा अधिक है। एक एंटीबॉडीज हमारे पास टीके के रूप में मौजूद होती है, जिन्हें प्रयोगशाला में बनाते हैं। दूसरा तरीका प्लाज्मा के जरिए एंटीबॉडीज पाने का होता है। इसे पेसिव एंटीबॉडी थेरेपी भी कहा जाता है।

कोरोना और प्लाज्मा थेरेपी

प्लाज्मा थेरेपी कोरोना के उन मरीजों को दी जा रही है, जिन्हें खतरा ज्यादा है और दूसरे उपायों से आराम न आ रहा हो। जो लोग पहले से ही एक्यूट रेस्पिरेटरी डिस्ट्रेस सिंड्रोम(एआरडीएस), हृदय रोग, डायबिटीज, किडनी या लिवर से जुड़ी समस्याओं से पीड़ित हैं, उनमें यह थेरेपी सहायक हो सकती है।

'साइंस' नामक जर्नल में प्रकाशित आलेख के अनुसार, कोरोना वायरस से संक्रमित लोगों में प्रारंभिक चरण में ही प्लाज्मा थेरेपी देना, उनमें लक्षणों को गंभीर होने से बचा सकता है।

प्लाज्मा दानी कौन?

वे सभी लोग जिन्हें पूरी तरह ठीक होने के 14 दिन हो चुके हैं, प्लाज्मा दान कर सकते हैं। प्लाज्मा एक सप्ताह में दो बार दान किया जा सकता है। एक व्यक्ति का प्लाज्मा दो व्यक्तियों के लिए इस्तेमाल हो सकता है। इनमें भी प्लाज्मा उन्हीं से लिया जाता है, जो - फिट और स्वस्थ हैं, जिनकी आयु 18 वर्ष से अधिक है, जो एचआईवी और हेपेटाइटिस बी या सी के संक्रमण से मुक्त हैं तथा नशीली दवा के इंजेक्शन नहीं लेते।

सुरक्षित है थेरेपी

आमतौर पर यह थेरेपी सुरक्षित है, क्योंकि प्लाज्मा डोनर संक्रमण से ठीक हो चुके होते हैं। इस थेरेपी का उपयोग उन रोगियों पर नहीं किया जाना चाहिए जिन्हें किसी तरह की एलर्जी हो, फेफड़े क्षतिग्रस्त हों और सांस लेने में परेशानी तथा अन्य प्रकार के संक्रमण संचरित हों। हालांकि प्लाज्मा थेरेपी रोगी को हर तरह से जांच के बाद ही दी जाती है।

कोरोना
उच्च मृत्यु दर में वायु प्रदूषण का तड़का

✍ निष्ठा शर्मा

वायु प्रदूषण का कोरोना की उच्च मृत्यु दर से सीधा सम्बन्ध है। हवा में प्रति घन मीटर एक माइक्रोग्राम पीएम कणों की बढ़ोतरी से कोरोना से मृत्यु का खतरा आठ फीसदी तक अधिक हो जाता है।

क्लाइमेट ट्रेंड द्वारा आयोजित एक वेबिनार में पिछले दिनों विशेषज्ञों ने हार्वर्ड यूनिवर्सिटी और इटली में हुए शोधों से सहमति जताई। लंग केयर फाउंडेशन के डॉ. अरविन्द कुमार ने बताया कि विश्व के तमाम देशों में इस प्रकार के शोध हुए हैं।

इटली में हुए ताजा शोध के मुताबिक पीएम 2.5 में हर एक माइक्रो ग्राम प्रति घन मीटर की वृद्धि के साथ कोविड-19 से मृत्यु का खतरा आठ फीसदी तक बढ़ सकता है। इस बीच राहत की बात यह रही कि कई जगह तालाबंदी से हवा साफ हुई, इसलिए फेफड़ों से जूझते मरीजों को थोड़ी राहत मिली है। जैसे ही प्रदूषण का यह खतरा बढ़ेगा, मरीजों की स्थिति फिर बिगड़ सकती है।

आईआईटी कानपुर के सिविल इंजीनियरिंग विभाग के प्रमुख डॉ. एस एन त्रिपाठी ने दिल्ली की हवा पर केन्द्रित पांच रिसर्च पेपर्स की मदद से इस बात को पुष्ट किया कि किस प्रकार वायु प्रदूषण एक बड़ी जन स्वास्थ्य समस्या बन चुका है।

वातावरण में कई गैसें एक आनुपातिक संतुलन में होती हैं। इनमें ऑक्सीजन के साथ कार्बन डाई ऑक्साइड, कार्बन मोनो ऑक्साइड आदि भी शामिल हैं। इनकी मात्रा में थोड़े से भी हेरफेर से संतुलन बिगड़ने लगता है और हवा प्रदूषित होने लगती है। मानवजनित गतिविधियों के चलते वायुमंडल में कार्बन डाई ऑक्साइड, कार्बन मोनो ऑक्साइड और मीथेन जैसी गैसों की मात्रा बढ़ने लगी है। बड़ी संख्या में वाहनों का धुंआ इस संतुलन को और बिगाड़ देता है। सर्दियों में यह स्थिति और भी घातक होने लगती है। सड़कों पर बेतहाशा दौड़ने वाले वाहनों से निकलने वाला यह प्राणघातक धुंआ चलती-फिरती मौत के समान है जो पहले हमें विभिन्न बिमारियों में जकड़ता है और फिर मौत की आगोश में सुलाते देर नहीं करता।

आंकड़ों का इस्तेमाल नीति निर्माण में हो

क्लाइमेट ट्रेंड्स की निदेशक आरती खौसला के अनुसार आईआईटी कानपुर के शोध में वाहनों से लेकर निर्माण कार्य तक से होने वाले प्रदूषण के गहन आंकड़े हैं, उनका इस्तेमाल नीति निर्माण में होना चाहिए। इंडिया क्लाइमेट कोलोब्रेटिव की श्लोका नाथ ने प्रदूषण संबंधी आंकड़े की कमी को उजागर करते हुए कहा कि देश में वायु प्रदूषण के आंकड़े की कमी को दूर करने के लिए 4,000 मॉनिटरिंग स्टेशन चाहिए। इसको पूरा करने में 10,000 करोड़ रुपये का खर्च आएगा, लेकिन इस दिशा में अपेक्षित कार्य नहीं हो रहा है।

वायु जनित रोगों में कारगर है मास्क

कोविड-19 के प्रसार को रोकने में मास्क पहनना है। इससे कई और फायदे भी हैं। खासकर, हानिकारक गैसें और हवा में मौजूद 10 पीएम से छोटे धूल कण श्वास नली में सूजन, एलर्जी और फेफड़ों की समस्या बढ़ाते हैं, जिससे मास्क बचाव करते हैं।

फेफड़ों की बीमारियां

वायु प्रदूषण, पराली का धुंआ और बेहद ठंडा मौसम जैसी समस्याएं सांस के मरीजों को बुरी तरह प्रभावित करती हैं। ऐसे में मास्क पहनने से राहत मिलती है। प्रदूषण रोधी मास्क पीएम 2.5 जैसे महीने कणों और कपड़े के बने अन्य मास्क सर्दियों में बेहद ठंडी हवा को सीधे नाक में प्रवेश करने से रोकते हैं। खासतौर से ड्रॉपलेट्स से फैलने वाले सार्स संक्रमण की रोकथाम में सर्जिकल मास्क एवं एन-95 मास्क की प्रभावशीलता क्रमश: 68% और 91% है।

अप्रत्यक्ष धूम्रपान

प्रतिवर्ष लाखों लोग धूम्रपान के कारण अपनी जान गंवा देते हैं, जिसमें करीब 10 फीसदी पैसिव स्मोकर्स होते हैं। मास्क लगाने की आदत लोगों को इस अप्रत्यक्ष धूम्रपान से बचा सकता है।

टीबी

टीबी की बीमारी, हवा में पनपने वाले बैक्टीरिया से होती है। संक्रमित व्यक्ति जब खुले में खांसता या छींकता है तो आसपास मौजूद लोग भी इस बैक्टीरिया की चपेट में आ सकते हैं, जबकि एक अच्छी गुणवत्ता वाला मास्क लगाकर इस बीमारी की चपेट से बचा जा सकता है।

स्टेट ऑफ ग्लोबल एयर, 2019 की एक रिपोर्ट कहती है कि वर्ष 2017 में करीब 12 लाख लोगों की वायु प्रदूषण से मौत हुई। रिपोर्ट ये भी कहती है कि लम्बे समय तक वायु प्रदूषण के कारण हर साल आघात, फेफड़े के कैंसर व अन्य समस्याएं, मधुमेह व हृदयाघात के मामले बढ़े हैं। हालांकि मास्क पहनने से बचाव होता है, पर यही एकमात्र उपाय नहीं है। शोध अभी भी जारी हैं।

त्वचा को नमी दें भरपूर

फेस मास्क से ढके चेहरे की त्वचा की प्राकृतिक आभा को बनाए रखने के लिए मॉइस्चराइजर और क्रीम का प्रयोग किया जाना चाहिए। यही नहीं, त्वचा को भरपूर नमी प्रदान करने के लिए दिन में कम से कम आठ से 10 गिलास पानी, बिना चीनी वाले जूस, नारियल पानी या सूप जरूर पिएं। नमी से भरपूर त्वचा पर कील-मुंहासे नहीं होते और त्वचा चमकदार, दाग-धब्बों रहित, निरोगी तथा ताजगी से भरपूर रहती है। अगर आपकी त्वचा भीतर से सेहतमंद रहेगी तो मास्क पहनने के कारण लगातार निकलने वाले पसीने और मास्क व त्वचा के बीच होने वाले घर्षण का अपनी त्वचा पर नकारात्मक असर कम-से-कम होगा।

WISH YOU A HAPPY NAVRATRI

KPL

KHICHA PHOSCHEM LTD.

204, Vinayak Business Centre, Fatehpura, Pulla Road, Udaipur - 313001 (Raj.)
Phone : 0294-2452151 (O) 6451366, 6451377, 2451332 (R)
(W) Madri : 0294-2490829, 6451257 Fax : 0294-2452149
E-mail : khichaphoschem@rediffmail.com, Website : www.khichaphoschem.com

कलमधर्मी संजय गोठवाल

✍ विष्णु शर्मा हितैषी

मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा गया है। तमाम व्यवधानों, विचलनों और विसंगतियों के बावजूद मीडिया आज भी अपनी इस भूमिका के दावे पर अडिग है। उसकी दुनिया घोर वास्तविकताओं की ऐसी दुनिया है, जिसने आदर्शों से अपना पीछा नहीं छुड़ाया। उसकी अपनी शक्ति और सत्ता है, जो मौजूदा कॉर्पोरेट युग में और अपरिहार्य हो गई है। लेकिन साथ ही उसकी चुनौतियां भी पहले के मुकाबले बढ़ी हैं।

इस आलेख में मेवाड़ क्षेत्र के उस साथी पत्रकार का जिक्र कर रहा हूं, जिसने समय की चुनौतियों को स्वीकार किया, तकलीफों के बावजूद पत्रकारिता के मान-मूल्यों के लिए सतत् सतर्क दृष्टि रखी तथा समाज को कलम के धर्म से रूबरू करवाया। मैं बात संजय गोठवाल की कर रहा हूं, जिसने पांच दशक की पत्रकारिता यात्रा में पूरे समर्पण भाव से लेखन किया।

संजय की कलम ने कई ऐसे मामले उजागर किए जो जागरूकता की मुनादी थे। उदयपुर की विश्व प्रसिद्ध झीलों के आसपास प्रभावशाली लोगों द्वारा अतिक्रमण, नाथद्वारा में दलितों के मंदिर प्रवेश, कपासन(चित्तौड़गढ़) में कमजोर वर्ग की पुलिस पिटाई और चांदी की तस्करी के ऐसे ही कुछ मामले थे, जिनकी उन्होंने बेबाकी से रिपोर्टिंग की। दबाव भी आए और धमकियां भी मिलीं। मानहानि के मुकदमे भी दायर हुए लेकिन न वे झुके और न टूटे।

सनसनी की पत्रकारिता से उन्हें परहेज था। उनसे मेरा परिचय तभी से था, जब वे पत्रकारिता में प्रविष्ट हुए। हम लोग निरन्तर इस बात के लिए जागरूक रहे कि खबरों की विश्वसनीयता के लिए सूचनाओं की पुष्टि की जाए क्योंकि वही खबर की विश्वसनीयता का मज़बूत आधार है, जिसके अभाव में काल्पनिक सूचनाएं माहौल को बिगाड़ देती हैं। संजय ने हमेशा अपनी खबरों को तथ्यों का आधार दिया।

बात 1984-85 की है, जब श्रीनाथजी मंदिर(नाथद्वारा) में दलितों के प्रवेश निषेध को लेकर काफी कोहराम मचा हुआ था। ऐसे में संजय ने नाथद्वारा में प्रवास कर, हालात, परम्परा, मान्यताओं और कानूनी प्रावधानों के अध्ययन से तथ्यात्मक खबर बनाई जो बम्बई के लोकप्रिय व चर्चित राष्ट्रीय साप्ताहिक 'ब्लिट्ज' में छपी। जिसकी न केवल सम्बंधित पक्षों ने सराहना की बल्कि मंदिर प्रवेश का ज्वलंत मुद्दा सुलझने की राह भी प्रशस्त हुई।

इससे पहले 1980 जून-जुलाई में राजस्थान में जगन्नाथ पहाड़िया सरकार के दौरान चित्तौड़गढ़ जिले के कपासन कस्बे के एक इलाके में किसी मामले को लेकर पुलिस द्वारा वंचित वर्ग के लोगों की बेरहमी से पिटाई के एक मामले को भी इन्होंने सम्पूर्ण तथ्यों और संवेदना के साथ कवर किया। उनकी इस खबर के प्रमुखता से छपने पर राज्य सरकार को उच्च स्तरीय जांच समिति तो बिठानी ही पड़ी, कई पुलिसकर्मी सस्पेंड भी हुए।

विश्व प्रसिद्ध पर्यटन नगरी उदयपुर की भाग्यरेखा झीलों के इर्द-गिर्द प्रभावशाली उद्यमियों व भूमाफियाओं के अतिक्रमण को लेकर भी संजय की कलम लगातार चली उनकी इस रिपोर्ट को 'ब्लिट्ज' के वार्षिक अंक में न केवल प्रमुख स्थान मिला बल्कि इन्हें इसके लिए विशेष पुरस्कार भी मिला। उदयपुर में ही चांदी की तस्करी और भू माफियाओं की व्यापकता पर भी इन्होंने खोजी पत्रकार की भूमिका का निर्वाह करते हुए इन मामलों में सभी तारों को जोड़ते हुए रिपोर्टिंग की और अपराध नियंत्रण में सहयोग किया। उन पर मानहानि के दावे तक हुए लेकिन पुख्ता सबूत के कारण या तो वे सिर्फ नोटिस अदायगी या प्रथम दृष्टया ही समाप्त हो गए। तथाकथित बड़े लोगों की नाराजगी झेलकर भी उन्होंने अपने धर्म का निर्वाह किया।

26 नवम्बर 1943 को कपड़ा व्यवसायी रामचन्द्र-मांगदेवी गोठवाल के घर जन्मे संजय बचपन से ही चिंतनशील थे। स्कूली शिक्षा के बाद भूपालसागर (चित्तौड़गढ़) में सरकारी नौकरी में प्रवेश किया लेकिन मन उचट गया और उदयपुर लौटकर पैतृक व्यवसाय में हाथ बटाने लगे। युवा संजय के तर्क संगत विचारों और लेखन से पिता के मित्र जीवन सिंह चौधरी बहुत प्रभावित हुए। तब चौधरी भीलवाड़ा से एक साप्ताहिक का प्रकाशन करते थे। उनकी प्रेरणा से संजय को मनपसंद मिशन मिल गया। वे कुछ न कुछ नया ही लिखने की कोशिश करते। जिसने उन्हें आगे जाकर एक सजग दृष्टि पत्रकार बनाया। आधुनिक राजस्थान, दैनिक न्याय, जैसे प्रादेशिक समाचार पत्रों में संवाद प्रेषण के बाद उन्हें राष्ट्रीय दैनिक 'जनसत्ता' और साप्ताहिक 'ब्लिट्ज' में रिपोर्टिंग का मौका मिला। नई दिल्ली से प्रकाशित दैनिक वीर अर्जुन एवं राष्ट्रीय संवाद एजेन्सी 'भाषा' से भी ये कुछ समय तक जुड़े। गृहशोभा, सरिता, मुक्ता रविवार, भूभारती, सरस सलिल जैसी पत्रिकाओं में भी इनके आलेख छपे।

कई सामाजिक संस्थाओं व पत्रकार संगठनों से सम्मानित संजय की अन्तिम मुलाकात उनके निधन से कुछ ही दिनों पूर्व हुई। फरवरी 2017 में हम उदयपुर से जयपुर साथ गए-आए। नवजीवन के सम्पादक जगदीश अग्रवाल भी साथ थे। क्या मालूम था कुछ ही दिनों बाद धुन का धनी, सीधा-सादा, तीखा लिखने और सपाट बोलने वाला संजय इतनी जल्दी हमसे अलविदा (15 मार्च 2017) कह जाएगा। उनकी यादों को संजोते हुए, उनकी एक किताब मेरे सामने है - 'मेरा मन भटक रहा है' वस्तुत: वह जितने संवेदनशील थे, उसी की परिणति हैं, इस संकलन की रचनाएं। उन्होंने 'पत्रकारिता-धर्म' की दीक्षा अपने दोनों बेटों दिनेश और सुनील की दी जो पूर्ण समर्पण भाव से पिता की उस विरासत को आगे बढ़ा रहे हैं।

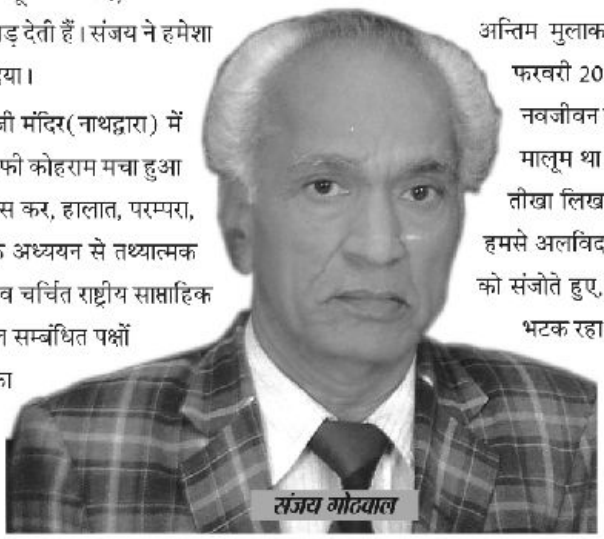

संजय गोठवाल

मॉनसून के बाद संक्रमण से रहें सावधान

✍ चयनिका निगम

मॉनसून के बाद भी कई संक्रमणों का खतरा बढ़ जाता है। इनमें पेट और त्वचा के संक्रमण प्रमुख हैं। इसलिए बारिश का मौसम बीत जाने के बाद आप बिल्कुल निश्चिंत न हो जाएं, बल्कि सावधान रहें।

संक्रमण और मॉनसून का रिश्ता बहुत गहरा है। संक्रमण वाली बीमारियां तो फैलती ही हैं, परन्तु उसके बाद भी संक्रमण से फैलने वाली बीमारियों में डेंगू, चिकनगुनिया, मलेरिया, वायरल फीवर, फंगल संक्रमण, अस्थमा आदि प्रमुख हैं।

महामारी का खतरा

शरीर के किसी खास अंग नहीं, बल्कि पूरे शरीर में मॉनसून के बाद के समय में सक्रमण का खतरा बढ़ जाता है। मानसून और उसके बाद भी पेट का खास ख्याल रखना होता है, तो त्वचा और बालों का भी।

गंदा पानी और मलेरिया

मॉनसून के दौरान संक्रमणों में मलेरिया एक बड़ी परेशानी है। इसकी वजह अक्सर नाली या सड़क के गड्ढों में जमा गंदा पानी होता है। इसमें मलेरिया के लिए जिम्मेदार मादा एनाफलीज मच्छर घर बना लेती हैं। जब ये मादा मच्छर काट लेती हैं, तो प्लाजमोडियम नाम के कीटाणु शरीर में घुसकर बहुत तेजी से पनपते हैं। फिर बुखार भी बहुत तेजी से आता है। मलेरियारोधी दवाएं लेनी पड़ती हैं। ख्याल रखने वाली बात यह है कि इन मच्छरों का प्रकोप रात में बढ़ जाता है। इसलिए इस मौसम में मच्छरदानी का इस्तेमाल जरूर करें।

बढ़ते जाते हैं बैक्टीरिया

मॉनसून के मौसम को बीमारियों का मौसम माना जाता है, मॉनसून जाने के बाद का समय भी कुछ कम घातक नहीं। इसलिए विशेषज्ञ मानते हैं कि सर्दी-गर्मी के मुकाबले इस मौसम में लोग बहुत बीमार पड़ते हैं। इस वक्त तापमान 20 से 25 डिग्री के करीब रहता है और इसमें बहुत ज्यादा नमी भी होती है। इसी वजह से बैक्टीरिया, वायरस आदि काफी संख्या में पनपने लगते हैं।

बरतें सावधानी

- पानी उबाल कर पिएं या पानी में क्लोरिन की टैबलेट डालें।
- हाथों को बार-बार धोएं।
- मरीज से मिलें, तो मुंह ढककर रखें।

चिकनगुनिया-डेंगू से बचें

यह चिकनगुनिया-डेंगू जैसे संक्रमण का सबसे उपयुक्त समय है। इस वक्त एडिस नाम के मच्छर खूब परेशान करते हैं। इन्हीं से चिकनगुनिया-डेंगू जैसी बीमारियां घर करने लगती हैं। दरअसल, ये मच्छर एक बार काटने भर से शरीर में वायरस छोड़ देते हैं। जिन लोगों की रोग प्रतिरोधक क्षमता कमजोर होती है, उन पर इसका असर अधिक होता है। तेज बुखार, उल्टी-दस्त और सिर दर्द भी बहुत होता है। खास बात यह है कि ये अपने आप ठीक होता है और इसमें 5 से 10 दिन का समय लगता है। यही वजह है कि डॉक्टर सिर्फ लक्षण का इलाज करते हैं। याद रखें कि डेंगू और चिकनगुनिया के मच्छर सुबह या शाम को ही काटते हैं।

जब हाथ से निकले बात

चिकनगुनिया-डेंगू वैसे तो समय के साथ ठीक हो जाता है, लेकिन अगर सीमित समय में मरीज ठीक नहीं होता, तो प्लेटलेटस् कम होने लगते हैं। हालांकि 100 में से एक रोगी को ही यह दिक्कत होती है। ऐसा उल्टियां ज्यादा होने की वजह से होता है। दरअसल उल्टियां होने से शरीर में इलेक्ट्रोलाइट कम हो जाते हैं और प्लेटलेट काउंट में गिरावट आने लगती है।

दम पर भारी दमा

मॉनसून के बाद का समय अस्थमा मरीजों के लिए भी खतरनाक होता है। बारिश के समय प्रदूषण हवा में नहीं होता, बल्कि बैठ जाता है। बारिश बीतने के बाद फिर से इसका असर होने के कारण दिक्कत बढ़ जाती है।

टोरजा हर साल संवरती है मृत देह

✍ उदय प्रजापत

इण्डोनेशिया में 'टोरजन' समुदाय के लोग कोरोना संक्रमण के बीच अपनी वार्षिक मानिन परम्परा के निर्वाह के लिए अगस्त के मध्य में घरों से बाहर निकले। उन्होंने मास्क पहनकर अपनों की कब्र खोदी। फिर उसमें मौजूद अवशेष निकाल कर उन्हें सजाया-संवारा। हंसी-खुशी कब्रों की सफाई की, मृत देह अथवा अवशेषों के साथ सेल्फी ली, उनके साथ भूली-बिसरी यादें ताजा की, तो कईयों ने उनके मुंह सिगरेट लगाई और खुद भी कश खींचे।

एक ओर जहां परिजनों और रिश्तेदारों की मौत पर लोग दुःख मनाते हैं, वहीं एशिया में इण्डोनेशिया एक ऐसा देश है, जहां मृत्यु उत्सव होता है, व्यक्ति के मरने के बाद वहां टोरजा अथवा टोरजन समुदाय के लोग मिलकर न केवल खुशी जताते हैं, बल्कि एक-दूसरे को बधाई भी देते हैं। बात अटपटी तो लगती है, लेकिन है सच्ची।

यह अजीब परम्परा इण्डोनेशिया के साउथ सुलावेसी क्षेत्र की है। यहां के टोरजा गांव में मान्यता है कि इन्सान अमर है और वह कभी नहीं मरता। यही वजह है कि ये लोग मरने के बाद गम की बजाय जश्न मनाते हैं और रिश्तेदारों-परिचितों को सालों तक जिंदा लोगों की तरह रखते और व्यवहार करते हैं। इसके लिए वे एक विशेष केमिकल से मृतकों की देह को सुरक्षित रखते हैं।

हर साल बदलते हैं ताबूत

टोरजन समुदाय के लोग हर साल अगस्त में पनगाला स्थित कब्रगाह में जुटते हैं और वहां दफन ममी निकालकर उन्हें उचित सम्मान देते हैं। अवशेष को सड़ने से रोकने के लिए वे न सिर्फ उस पर रासायनिक लेप लगाते हैं, बल्कि हर साल ताबूत भी बदलते हैं। उन्हें लगता है कि अवशेष के अच्छी स्थिति में रहने पर पूर्वजों का उन पर भरपूर आशीर्वाद बना रहेगा। मरने के बाद भी पूर्वजों से भावनात्मक रूप से जुड़े रहने की यह परम्परा अथवा मान्यता अपने आप में अनूठी है। मरने के बाद भी परिवार के लोग मृतक से अलग नहीं हो पाते।

शेष पेज 41 पर ....

नवरात्रि पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं

फोन :- 0294-2429053

कन्हैयालाल जैन
राकेश जैन (बंटी)

राजस्थान मेडिकल स्टोर

महाराणा भूपाल राजकीय चिकित्सालय के सामने, उदयपुर

सस्पेन्शन ऑर्डर

✍ प्रेम कोमल बूंलिया

आज उनके प्रमोशन की धमाकेदार खबर ने हमारे उसूलों से ओत-प्रोत मन को झकझोर कर रख दिया। लम्बे समय से सीनेरेटी की श्रृंखला की दूसरी कड़ी पर अटके हम अपने प्रमोशन का इन्तजार कर ही रहे थे कि हमारे दिल पर यह भारी वज्रपात हुआ। हम श्रृंखला की पहली कड़ी से फिसल कर अन्तिम कड़ी पर आ गये और 'वे' मेरिट में प्रमोशन पाकर श्रृंखला की पहली कड़ी बन बैठे।

लोग चार-चार चार्ज शीटों के साथ दो-दो साल सस्पेण्ड रहकर भी मेरिट में कैसे प्रमोशन पा लेते हैं, यह रहस्य हमारी मोटी बुद्धि में आज तक नहीं आया। हम संस्कारों से बंधे प्रत्येक कदम फूंक-फूंक कर रखते हुए आगे बढ़ते होते हैं कि कोई भी हमारे संस्कारों का खून कर ठोकर मारते हुए आगे निकल जाता है। हम चारों खाने चित्त उन्हें पहली सीढ़ी पर चढ़ा देखकर जार-जार रोते रहते हैं।

किसने बनाये ये कानून, मिले तो पूछें 'मेरे भाई, क्या हम जैसों की भलाई के लिये भी तुमने कुछ लिखा है ?' लेकिन क्या फायदा 'वे' तो लिखकर अनन्त के पार चले गये और हमें सूली पर लटका गये। यही तो विडम्बना है कि जो भी कानून बनता है, उसे तोड़ने के दस रास्ते पहले बनते हैं। कानून तो उनका दास है जो चाँदी का जूता पहनने और खोलकर दूसरों को मारने की ताकत रखते हों। जनाब चांदी के जूते में वो ताकत है कि आसमां भी धरती पर उतरने को विवश हो जाये, फिर भला प्रमोशन क्या चीज है।

बरसों से घिसट-घिसट कर हम अभी एक सीढ़ी भी ठीक से नहीं चढ़ पाये थे कि चाँदी के जूते के बदौलत 'वे' मंजिल पार नजर आए। सरकार से मिली चार्ज शीट उनके लिए वरदान सिद्ध हुई। दो बरस तक सस्पेण्ड रहकर उन्होंने घर भर के कई काम निपटा लिये और बहाल होकर एक मुश्त तनख्वाह भी वसूल ली। इसे कहते हैं 'हींग लगे न फिटकरी रंग भी चोखा आए।'

जिन्दगी भर हाड़ तोड़ मेहनत और खून पसीना बहाकर भी हम अब तक दो जून रोटी के फेर में पड़े हैं और 'वे' एसी की हवा में बैठ बड़े-बड़े प्लान डिस्कशन करते चाँदी के सिक्कों से घर भरते रहे। घर भी वो जो ससुराल के खर्चे से बन पाया और प्रमोशन पर प्रमोशन प्राप्त करते रहे। 'उन्हें' रोटी की चिन्ता नहीं 'वे' सिक्के खाते हैं, सिक्के पहनते हैं, सिक्के ओढ़ते हैं और सिक्कों की दावत से ही हर बार और ऊंची कुर्सी प्राप्त करने में सफल हो जाते हैं। हम ठहरे उल्लू। सिक्कों की महिमा से अनजान काम और ईमानदारी को अपना उसूल बना कर दिन रात दो वक्त चूल्हा जलाने की उलझन में उलझे हैं। न बच्चों को अच्छे स्कूल में पढ़ा पा रहे हैं और न साईकिल छोड़ स्कूटर पर चढ़ पा रहे हैं और 'वे' हैं कि कार से नीचे नहीं उतरते, बच्चे हिल स्टेशन के कॉन्वेन्ट में पढ़ रहे हैं।

जीवन स्तर का यह अन्तर हमारी मोटी बुद्धि में क्यों नहीं आता। हम और 'वे' एक जैसी नौकरी करते हैं फर्क है तो सिर्फ इतना कि 'वे' सस्पेण्ड हो गये, हम लाख कोशिशों के बावजूद नहीं हो पाये। उनके खिलाफ चार-चार चार्ज शीटें हैं और हम लाख हाथ पैर मारकर भी एक भी चार्ज शीट नहीं हथिया पाये। अब आप ही कहिये क्या यह हमारा दोष है ? हम लाख बुद्धू सही लेकिन एक चार्ज शीट के हकदार तो हैं ही, लेकिन छोड़िये हक की बातें। कौन सुनता है यहाँ। हमेशा एक का हक दूसरा मारता आया है। 'माईट इज राईट' यानि जिसकी लाठी उसकी भैंस। जिसकी लाठी में दम है वो ही भैंस हाँक ले जाता है। चार्ज शीट का यह वरदान भी हमारे कमजोर हाथों से फिसल कर सीधा उनकी झोली में जा गिरा और आज 'वे' फिर प्रमोशन पा गये हम हाथ मलते रह गये।

हम डरते-डरते कई बार अफसर की हुकम उदूली करते रहे। सोचा खफा होकर इस बार वे जरूर सस्पेण्ड कर देंगे। नहीं होगा तो एक आध चार्ज शीट ही थमा देंगे लेकिन वह भी नसीब नहीं हुई। वे भी हमें नासमझ मान कर माथा ठनकाते कतराते रहे।

हमने हुकम उदूली की, ऑफिस अक्सर देर से आये, फाईलें उल्टी सीधी बनाई लेकिन इन कोशिशों के बावजूद सस्पेण्ड नहीं हो पाये। उल्टे हुआ यूं कि हमारी गलती पर कोई ध्यान ही नहीं देता। बेकार की चीज समझ कर कचरे की टोकरी में गिरा एक पुर्जा बन कर रहे गये हम। सारा ध्यान 'अट्रेक्ट'

करने का ठेका तो उनका है। हम तो गोया इस धरती पर कोई हैसियत लेकर पैदा ही नहीं हुए। जी तो चाहता है अपने अफसर से दो-दो हाथ ही कर लें ताकि खफा होकर हमें 'सस्पेण्ड' कर दें। सस्पेण्ड होते ही हमारा प्रमोशन पक्का। इसकी हमें पूरी उम्मीद है।

आज दफ्तर में बड़ी गहमा-गहमी है। हमारा दिल धड़क उठा। हो न हो हमारे सस्पेंशन ऑर्डर आ गये शायद। लेकिन बड़े बाबू ने हमारा यह भ्रम जल्दी ही तोड़ दिया। उन्होंने बताया फलां-फलां का प्रमोशन हो गया और फलां सस्पेण्ड हो गये। हम सिर पकड़ कर बैठ गये। बड़े बाबू ने हमारी तबियत खराब जान हमें पानी पिलाया। हमने कहा बड़े बाबू ठीक से देखिये सस्पेंशन वाली सूची। बड़े बाबू ने हमें ऊपर से नीचे तक देखा और गर्दन हिला दी।

हम धड़ाम से गिरे। हाय रे, किस्मत क्या हम सस्पेंशन के लायक भी नहीं। माँ-बाप ने हमें सारी शिक्षाएँ दीं लेकिन बदलते परिवेश में सस्पेण्ड कैसे हुआ जाता है, यह बताना क्यों भूल गये। अब भी हम उम्मीद का दामन नहीं छोड़ेंगे। एक दिन की किस्मत का सितारा चमकता है। किसी दिन यह सितारा हमारे गरीबखाने पर भी चमकेगा और हम सस्पेण्ड होकर रहेंगे। फिर हमारे भी दिन चाँदी के और रातें सोने की होंगी।

पेज 38 का शेष ....

मीलों तक फैला है इलाका

पर्वतीय श्रृंखलाओं में मीलों तक फैले सुलावेसी क्षेत्र के मध्य बसे टोरजा गांव में रसीले फलों और चावल की खेती होती है। इण्डोनेशिया एक मुस्लिम राष्ट्र है जबकि सुलावेसी व टोरजा इसाई बहुल क्षेत्र है। इस क्षेत्र में मृत्यु भी अर्थव्यवस्था का एक हिस्सा है। लोग इस परम्परा के निर्वाह के लिए वर्ष भर-बचत करते हैं, समय आने पर दिल खोलकर खर्च करते हैं। उनके लिए नए कपड़े, प्रसाधन सामग्री, ताबूत और खाने-पीने की चीजों पर जमकर खर्च करते हैं। मृत्यु के बाद जब दफनाते हैं, तब भी ऐसा ही धूम-धड़ाका और खर्चा होता है। मानिन परम्परा के निर्वाह के दौरान भी टोरजन समुदाय कब्र से बाहर निकालने के बाद अपनों को आकर्षक कपड़े, जूते, गहने और असेसरीज तो पहनाते ही हैं, साथ में उनके मनपसंद खाने का भी भोग लगाते हैं। दोबारा दफनाते समय वे ताबूत में अपनों के पसंदीदा तोहफे जरूर रखते हैं, ताकि उन्हें भौतिक सुख-सुविधाओं की कमी न खले।

शिशु का अंतिम संस्कार

इस समुदाय में जब कोई शिशु मर जाता है तो उसे किसी खोखले पेड़ की कोटर में दफनाने का भी उल्लेख है। इसके पीछे उनकी मान्यता है कि पेड़ के साथ-साथ बच्चा भी बड़ा होता रहेगा। इस पेड़ से परिवार एक मजबूत भावनात्मक रिश्ता भी जोड़ लेता है। इससे उनका प्रकृति और पर्यावरणीय प्रेम भी झलकता है।

कार्यसमिति सदस्य मीणा का अभिनन्दन

उदयपुर। पुनर्गठित अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की कार्यसमिति में राज्य के पूर्व मंत्री एवं उदयपुर के पूर्व सांसद रघुवीर सिंह मीणा को पुन: सदस्य बनाए जाने पर उदयपुर कांग्रेस में हर्ष व्यक्त किया गया है। कार्यसमिति में राजस्थान से एक और सदस्य भंवर जितेन्द्र सिंह(अलवर) को भी स्थान मिला है। रघुवीर सिंह मीणा की कार्य समिति में पुन: नियुक्ति के बाद उदयपुर आने पर पार्टी कार्यकर्ताओं ने ढोल-नगाड़ों के साथ स्वागत किया। प्रदेश कांग्रेस के पूर्व सचिव एवं कांग्रेस मीडिया सेन्टर अध्यक्ष पंकज कुमार शर्मा के नेतृत्व में बलीचा में गर्म जोशी से उनका स्वागत किया गया। यहां से वे सेक्टर 14 स्थित निवास पर पहुंचे। जहां

उन्होंने यह भरोसा दिलाया कि पार्टी ने उनमें जो विश्वास व्यक्त किया है, उस पर वे खरा उतरने की पूरी कोशिश करेंगे। इस दौरान पूर्व मंत्री डॉ. मांगीलाल गरासिया, लालसिंह झाला, गोपाल कृष्ण शर्मा, देवेन्द्र सिंह शक्तावत, सुधीर जोशी, दिलीप प्रभाकर, सुरेश श्रीमाली, सीमा पंचोली, फिरोज अहमद शेख, संदीप गर्ग, उमेश शर्मा, दुर्गेश मेनारिया, भगवान सोनी आदि भी मौजूद थे। मीणा ने मेवाड़ के पूर्व वरिष्ठ नेताओं मोहनलाल सुखाड़िया, गुलाबसिंह शक्तावत, हनुमान प्रसाद प्रभाकर, रोशनलाल शर्मा व स्वतंत्रता सेनानी कनक मधुकर की समाधियों पर जाकर पुष्पांजलि अर्पित की।

विजयादशमी पर मेहमानों का करें खीर से स्वागत

खीर की खुशबू आते ही मन ललचा जाता है। खीर भला कौन खाना नहीं चाहता। दूध और चावल की खीर तो बहुत खाई है, लेकिन इस बार चावल की बजाय कुछ अलग तरह की खीर का आनंद लें।

✍ गीता भारती

आलू की खीर

सामग्री : दूध आधा लीटर, आलू एक, शक्कर स्वादानुसार, केसर चुटकीभर एवं कटे हुए ड्राईफ्रूट्स

विधि : सबसे पहले दूध को गाढ़ा होने तक उबाल लें। साथ ही आलू को मीडियम साइज में काट लें। फिर घी में लाइट फ्राई करें। केसर व शक्कर मिलाकर शक्कर के पिघलने तक पकाएं। फ्राई किए हुए आलू व ड्राईफ्रूट्स मिलाकर 5 मिनट तक पकाएं। अब आलू की खीर को फ्रिज में ठंडा करने के लिए रखें।

कद्दू की खीर

विधि : दूध व चावल गाढ़े होने तक पकाएं। कद्दू और चीनी डालें और 2-3 उबाल आने के बाद आंच से उतार लें। केसर, इलायची पाउडर, काजू, किशमिश व बादाम मिलाएं। गुलाब जल छिड़क कर सर्व करें।

सामग्री : दूध 2 लीटर, चीनी 8 चम्मच, चावल 1 बड़ा चम्मच, कद्दूकस किया हुआ कद्दू 1 कप, केसर के धागे 5-6, बादाम 10, इलायची पाउडर आधा चुटकी, गुलाब जल 2 चम्मच।

गुलाब की खीर

सामग्री : दूध 4 कप, चावल 1 कप, इलायची पाउडर आधा चम्मच, चीनी-1 कप पिस्ता, किशमिश 10, गुलाब जल 1 चम्मच, गुलाब की पंखुड़ियां 1 चम्मच, गुलकंद 10 ग्राम

विधि : दूध को गहरे पैन में डालें। जब वह उबलने लगे तब उसमें चीनी और चावल मिक्स करें। ऊपर से इलायची पाउडर डाल कर दूध को 10 मिनट और पकाएं। इसे बीच-बीच में चलाती रहें। मिश्रण को तब तक पकाएं जब तक कि चावल टूट कर पूरी तरह से पक न जाएं। अब खीर को आंच से उतारें, फिर इसे ठंडा कर के फ्रिज में रख दें। इसमें गुलाब की पंखुड़ियां, गुलाब जल और गुलकंद मिक्स करें। अब इसे किसी खूबसूरत से कांच के बाउल में सर्व करें।

लौकी की खीर

सामग्री : दूध 1 लीटर, लौकी 500 ग्राम, घी 1 चम्मच, काजू 10, किशमिश 25-30, चीनी 100 ग्राम, इलायची पाउडर आधा चम्मच।

विधि : सबसे पहले भारी तले के बर्तन में दूध को गरम करने के लिए रख दें। लौकी को छीलकर, धोकर, कद्दूकस कर लें और इसके बीच हटा दें अब लौकी का पानी निचोड़ कर निकाल दें। कद्दूकस की हुई लौकी को कढ़ाही में घी डालकर फ्राई कर लें। दूध में उबाल आने के बाद भुनी लौकी को दूध में डालकर मिक्स कर दें। खीर को गाढ़ा होने तक पकने दें। काजू और किशमिश को दूध में डाल कर उबाल आने तक चमचे से चलाएं। गैस धीमी कर दें। खीर को प्रत्येक 3-4 मिनिट में चमचे से चलाते रहें। खीर को तब तक पकने दें, जब तक कि खीर को चमचे से गिराने पर लौकी और दूध एक साथ न गिरने लगे। खीर में चीनी डाल कर 3-4 मिनिट तक पकने दें। लौकी की खीर बन कर तैयार है, गैस बन्द कर दें। खीर में इलायची पाउडर डाल कर मिलाएं। प्याले में निकाल कर कतरे हुए बादाम ऊपर से डाल कर सजाएं।

इस माह आपके सितारे

पं. शोभालाल शर्मा

मेष

कॅरियर एवं आर्थिक प्रगति में भाग्य साथ देगा। विद्यार्थी वर्ग को परेशानी होगी, स्वास्थ्य मध्यम रहेगा, व्यवसाय एवं कर्म क्षेत्र में नई सम्भावनाएं बनेगी, शत्रु पक्ष क्षति पहुंचा सकता है।

वृषभ

कुछ न कुछ परेशानियां आती रहेंगी, परन्तु समाधान भी यथोचित होगा। जो समस्याएँ पहले से चल रही थीं उनका हल हो सकेगा। विद्यार्थी वर्ग को सफलता मिल सकती है, आर्थिक पक्ष सामान्य, पेट और कंधे में दर्द सम्भव।

मिथुन

कॅरियर की दृष्टि से यह माह शुभ है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। कार्य क्षेत्र में श्रेष्ठता का अनुभव, प्रतियोगी परीक्षा में सफलता प्राप्त होगी। स्वास्थ्य की दृष्टि से छाती सम्बंधी कष्ट हो सकता है, निकटवर्ती रिश्तेदार से कहासुनी सम्भव।

कर्क

कार्य क्षेत्र में सफलता मिलेगी। सहयोगियों द्वारा प्रशंसा होगी। व्यवसाय में प्रगति की सम्भावना बनेगी। पारिवारिक जीवन सुखद, कोई नई कार्य योजना बन सकती है। मुख सम्बंधी रोग हो सकता है, विद्यार्थी वर्ग सफल रहेगा।

सिंह

माह का पूर्वार्द्ध अच्छा व्यतीत होगा, किन्तु उत्तरार्द्ध में आत्मबल की कमी अनुभव करेंगे। आय पक्ष श्रेष्ठ, कार्य क्षेत्र में कोई न कोई कठिनाइयां आती रहेंगी। भाग्य का पूर्ण सहयोग, विद्यार्थी वर्ग को विशेष लाभ प्राप्त होगा। कान-आंख से जुड़ी तकलीफ हो सकती है।

कन्या

यह माह आपके लिए मध्यम है, कुछ नया करने की इच्छा तो होगी परन्तु कर नहीं पायेंगे, स्वास्थ्य सामान्य रहेगा, आय पक्ष सामान्य, परन्तु आगे की योजना अभी से बनाना हितकर रहेगा। किसी अज्ञात भय से मानसिक परेशानी रहेगी एवं सिरदर्द सतायेगा, भौतिक सुखों में वृद्धि सम्भव, परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे।

तुला

नौकरी एवं व्यवसाय में सावधानी बरतें वरना शत्रुओं द्वारा साजिश के शिकार हो सकते हैं। आर्थिक पक्ष से यह माह मजबूती प्रदान करेगा। स्थायित्व के कार्यों पर अधिक जोर देना होगा तथा स्थायित्व के कार्यों को सम्पादित करना होगा। स्वास्थ्य नरम रहेगा, आँख, सिर एवं कान में प्रायः दर्द रहेगा।

माह के प्रमुख उत्सव

दिनांक	तिथि	पर्व/त्योहार
2 अक्टूबर	आश्विन कृष्णा 1	गांधी व शास्त्री जयंती
17 अक्टूबर	आश्विन शुक्ला 1	नवरात्रि स्थापना/अग्रसेन जयंती
24 अक्टूबर	आश्विन शुक्ला अष्टमी	दुर्गाष्टमी
25 अक्टूबर	आश्विन शुक्ला दशमी	विजया दशमी
31 अक्टूबर	आश्विन शुक्ला पूर्णिमा	वाल्मिकी जयंती

वृश्चिक

परिवार में हुआ कलह सुलझ सकता है, कार्य क्षेत्र में प्रगति तथा आमदनी में भी इजाफा होगा। कारोबारियों को इच्छानुसार लाभ मिल सकता है, परन्तु लेन-देन पर पैनी नजर रखें। शरीर के बायें हिस्से में दर्द की सम्भावना रहेगी, विद्यार्थी वर्ग को अनुकूल सफलता मिलेगी।

धनु

पुरानी व्याधियों से मुक्ति मिलेगी, नौकरी पेशा जातकों को अच्छे फल प्राप्त होंगे, व्यापारी वर्ग को सफलता के लिए संघर्ष करना होगा, पारिवारिक जीवन में खुशी रहेगी, पैतृक मामले पक्ष में रह सकते हैं। आर्थिक स्थिति सामान्य, व्यावसायिक यात्राएँ सफलता दिलायेगी।

मकर

यह माह सामान्य सा है, कार्य क्षेत्र में थोड़ी गति आयेगी, जिससे परिवार प्रसन्न होगा व आय पक्ष मजबूत बनेगा। विद्यार्थी वर्ग को अत्यधिक परिश्रम करना होगा। धार्मिक कार्यों में समय एवं धन दोनों देने होंगे। दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा।

कुम्भ

आय अच्छी होने से हर्षोल्लास रहेगा। स्थान परिवर्तन सम्भव, भाई-बहिनों के सहयोग से कुछ नया कर पायेंगे, जो लोग किसी लम्बी बीमारी से ग्रस्त हैं उन्हें अपना विशेष ध्यान रखना होगा। दाम्पत्य जीवन में पारिवारिक मतभेद उभर सकते हैं।

मीन

यह माह आपको मिश्रित फल देगा। कर्म क्षेत्र में प्रतिष्ठा बढ़ेगी एवं आगे की रणनीति बनाना कारगर सिद्ध होगा, जिससे दीर्घकालिक लाभ मिलेगा। पैतृक मामले आपके हक में रहेंगे, आय पक्ष सुदृढ़ बनेगा। विद्यार्थी वर्ग असन्तुष्ट रहेगा।

Your Trust Our Passion...

FIVE STAR BUILD ESTATE PVT. LTD.

A Real Estate & Construction

27, Ist Floor, Diamond Plaza, Opp. Choudhary Hospital,
Hiran Magri, Sec. 4, Udaipur (Raj.) 313002
Email: devvardar@gmail.com,
Mob.: 98295-62167, Ph.: 0294-2461186 (R)

Praman
Construction Pvt. Ltd.

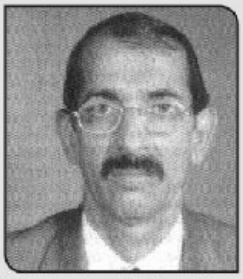

Hemraj Vardar

Office: 9, Five Star Complex, Near Kumbha Nagar,
Hiran Magri, Sector No. 4, Udaipur-313001 (Raj.)
Telefax: 0294- (O) 2461648, (R) 2461186,
Mobile: 98299-48186
Email: pcpl.udaipur@gmail.com

Sister Concern:

D.V. CONSULTING STRUCTURAL ENGINEERS

Expert in Structure Design with Etabs, Safe, Sap, Staad
Email: dvardar@gmail.com

65 विद्यार्थियों का सम्मान

उदयपुर। मावली–डबोक स्टेट हाईवे स्थित एसआरएम इन्टरनेशनल स्कूल में मेधावी विद्यार्थियों का सम्मान एवं लैपटॉप वितरण समारोह हुआ। मावली एवं वल्लभनगर विधानसभा क्षेत्र में बारहवीं कक्षा में 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले प्रतिभावान 65 विद्यार्थियों को लैपटॉप देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि चित्तौड़गढ़ सांसद चंद्रप्रकाश जोशी, विशिष्ट अतिथि विधायक धर्मनारायण जोशी थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता सरस डेयरी चेयरमैन गीता पटेल ने की। एसआरएम ग्रुप चेयरमैन रतन सिंह झाला ने कहा कि एसआरएम ग्रुप की हमेशा यही कोशिश रहती है कि इस अंचल के बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में पीछे ना रहे। एमडी हिम्मत सिंह झाला ने आभार जताया।

प्रो. सारंगदेवोत जेएनवीयू सिनेट सदस्य

उदयपुर। राज्यपाल कलराज मिश्र ने जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत को जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर में अपने प्रतिनिधि के रूप में सिनेट सदस्य मनोनीत किया है। प्रो. सारंगदेवोत वर्तमान में ऑल इंडिया वाइस चांसलर एसोसिएशन के कार्यकारी अध्यक्ष भी हैं।

कामिनी महामंत्री नियुक्त

उदयपुर। अखिल भारतीय महिला महासभा की राष्ट्रीय अध्यक्ष रेनू चौधरी गुर्जर ने कामिनी गुर्जर को संगठन में महामंत्री के पद पर नियुक्त किया है।

दिव्यांग दिग्दर्शिका का लोकार्पण

उदयपुर। विकलांग कल्याण समिति ने चालीस वर्ष की पूर्णता पर स्मृतियान–दिव्यांग दिग्दर्शिका का विमोचन किया। अग्रवाल धर्मशाला के अध्यक्ष ओम बंसल और मनमोहनराज सिंघवी ने विमोचन किया। समिति अध्यक्ष डॉ. यशवंत सिंह कोठारी ने बताया कि दिग्दर्शिका में दिव्यांग व्यक्तियों के कल्याण के लिए समिति के पिछले 40 वर्षों से किए जा रहे कार्यक्रमों के अलावा संस्था का परिचय शामिल है।

अरोड़ा का अभिनन्दन

उदयपुर। स्वयं सेवी शिक्षण संस्था संघ राजस्थान के प्रदेशाध्यक्ष और प्रदेश महामंत्री किशन मित्तल ने हैप्पी होम स्कूल के संस्थापक जगदीश अरोड़ा को प्रदेश उपाध्यक्ष नियुक्त किया है। अरोड़ा कई वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में सक्रिय हैं। उदयपुर प्राइवेट स्कूल डायरेक्टर एवं मैनेजमेन्ट एसोसिएशन की ओर से आयोजित समारोह में अरोड़ा का संरक्षक गिरधारी कुमावत, देवेन्द्र कुमावत, जिलाध्यक्ष जितेश श्रीमाली, जिला उपाध्यक्ष दिलीप सिंह यादव व सचिव डॉ. उपेन्द्र रावल ने अभिनन्दन किया।

डॉ. बंसल बनी अध्यक्ष

उदयपुर। वुमंस चैम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज ने विभिन्न पदाधिकारियों का मनोनयन किया। इसमें डॉ. मनजीत कौर बंसल को एमएसएमई परिषद में राज्य अध्यक्ष, डॉ. गायत्री तिवारी को उपाध्यक्ष बाल एवं बुजुर्ग परिषद, डॉ. लक्ष्मी झाला को हेल्थकेयर काउंसिल, पूजा सियाल को प्रशिक्षण और शिक्षण परिषद, डॉ. स्मिता सिंह को संस्कृति और विरासत परिषद, श्वेता बियानी को कल्याण परिषद, सुनंदा जैन को आतिथ्य परिषद, प्रिया मोगरा को ई–कॉमर्स काउंसिल, मोनेता बख्शी प्राथमिक शिक्षा परिषद, डॉ. सीमा मलिक उच्च शिक्षा परिषद, डॉ. सरोज शर्मा आयुर्वेद परिषद, प्रीता भार्गव जेल सुधार परिषद, रिंकू शर्मा मानव संसाधन परिषद व रिद्धिमा खमेसरा को खाद्य और पोषण परिषद में पदाधिकारी मनोनीत किया।

कुंतीलाल संभाग प्रभारी

उदयपुर। मुनि प्रमाण सागर के मार्गदर्शन में देशव्यापी जैन गणना जागरूकता अभियान का उदयपुर संभाग प्रभारी कुन्तीलाल जैन को बनाया गया है। जैन को सम्पूर्ण जिले में व्यापक प्रचार–प्रसार व सभी जैन परिवारों से ऑनलाइन फॉर्म भरवाने का दायित्व सौंपा गया है।

प्रो. साधना व प्रो. चौधरी बॉम सदस्य

उदयपुर। मो.सु. विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अमेरिका सिंह ने भूगोल विभाग की प्रो. साधना कोठारी एवं फार्मेसी विभाग के प्रो. पी के चौधरी को विश्वविद्यालय के प्रबंध मंडल का सदस्य मनोनीत किया गया है। दोनों का चयन एक वर्ष या साठ वर्ष की आयु पूरी होने तक के लिए किया गया है।

ऋषभ जैन अध्यक्ष मनोनीत

उदयपुर। उदयपुर टूरिस्ट बस एसोसिएशन के चुनाव में ऋषभ जैन निर्विरोध अध्यक्ष चुने गए। सचिव पद पर सत्यनारायण मेनारिया व कोषाध्यक्ष पद पर वीरेन्द्र जैन चुने गए।

उपाध्याय का अभिनंदन

जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग, राजस्थान के आयुक्त जितेन्द्र उपाध्याय का गांधी टोपी, सूत की माला एवं शॉल से अभिनंदन करते महात्मा गांधी जीवन दर्शन समिति के सदस्य।

विप्लवी प्रदेश-प्रवक्ता

उदयपुर। विप्र फाउण्डेशन जोन-1 ए के प्रदेश अध्यक्ष के के शर्मा ने विजयप्रकाश विप्लवी को प्रवक्ता व भंवरलाल शर्मा को प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य मनोनीत किया। उदयपुर शहर कार्यकारिणी में अध्यक्ष हिम्मतलाल नागदा ने जगदीश मेनारिया को सचिव नियुक्त किया।

लूणदिया अध्यक्ष

उदयपुर। तरुण क्रांति मंच गुरु परिवार की कार्यकारिणी का गठन हुआ। इसमें अनिल लूणदिया अध्यक्ष, ऋषभ रलावत कार्याध्यक्ष, गौरव गनेडिया, महामंत्री राजकुमार अखावत उपाध्यक्ष और नीलेश मेहता मंत्री निर्वाचित हुए।

प्रियंका देवपुरा को पीएचडी.

नाथद्वारा। मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर के गृहविज्ञान विभाग के अन्तर्गत प्रियंका देवपुरा, नाथद्वारा को पीएचडी उपाधि प्रदान की गई। यह उपाधि उनके शोध 'राजस्थान के चयनित क्षेत्रों में दृष्टिहीन बालकों का व्यक्तित्व विकास एवम् स्वयं की चुनौतियां व उनके अभिभावकों की चुनौतियों का एक अध्ययन' विषय पर किए शोध के लिए प्रदान की गई। यह शोध कार्य बी.एन विश्वविद्यालय, उदयपुर के गृहविज्ञान विभाग की सह आचार्य एवम् विभाग प्रमुख डॉ. शिल्पा राठौड़ के निर्देशन में पूर्ण किया गया। ज्ञातव्य है कि सुश्री प्रियंका देवपुरा, देश के ख्यातनाम साहित्यकार भगवती प्रसाद देवपुरा की सुपौत्री एवम् साहित्य मंडल, नाथद्वारा के प्रधानमंत्री श्याम देवपुरा की सुपुत्री हैं। इन्हें पूर्व में स्नातकोत्तर परीक्षा में भी स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ था।

फिल्म पॉलिसी को लेकर बैठक

उदयपुर। कला, साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग जयपुर में राजस्थान में फिल्म पॉलिसी को लेकर बैठक हुई। इसमें शहर के लाइन प्रोड्यूसर मुकेश माधवानी ने भाग लिया और फिल्म सिटी बनाने को लेकर चर्चा की।

कप्पू बने अध्यक्ष

उदयपुर। सिक्ख समाज सेवा समिति के द्विवार्षिक चुनाव में सर्वसम्मति से रविन्द्रपाल सिंह कप्पू को अध्यक्ष व आयुष अरोड़ा को सचिव चुना गया। सिक्ख समाज सेवा समिति लंगर की सेवा, लोगों को ब्लड उपलब्ध करवाना डायबिटीज व ब्लड प्रेशर का फ्री चेकअप करना आदि समाज सेवा के कार्य करती है।

डॉ. गायत्री को एशियन अवार्ड

उदयपुर। महाराणा प्रताप कृषि एवं अभियांत्रिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर के संघटक सामुदायिक एवं व्यावहारिक विज्ञान महाविद्यालय को शिक्षा में उत्कृष्ट योगदान के लिए शिक्षक दिवस पर एशियन एजुकेशन अवार्ड्स-2020 पुरस्कार के तहत 'मोस्ट इमर्जिंग हायर एजुकेशन इंस्टीट्यूट ऑफ द ईयर अवार्ड' से नवाजा गया। मानव विकास और पारिवारिक संबंध विभागाध्यक्ष डॉ. गायत्री तिवारी को भी शिक्षा में नवाचार के लिए 'इनोवेटिव टीचर ऑफ द ईयर' पुरस्कार प्रदान किया गया।

डॉ. अरविंदर का दो यूनिवर्सिटीज में चयन

उदयपुर। अर्थ डायग्नोस्टिक्स के सीईओ डॉ. अरविन्दर सिंह का नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी दिल्ली में क्रिमिनल लॉ के एलएलएम प्रोग्राम में चयन हुआ। इसी के साथ डॉ. सिंह का चयन स्विट्जरलैण्ड के जेम्स लिंड इंस्टीट्यूट में वर्चुअल क्लासरूम ट्रेनिंग के लिए भी हो गया, जो कि 18 माह का प्रोग्राम है। इस कोर्स में डॉ. सिंह एडवांस्ड सर्टिफिकेट इन मेडिकल लॉ एंड बायोएथिक्स में स्पेशलाइज करेंगे। डॉ. अरविंदर यह दोनों कोर्सेज साथ-साथ करेंगे। डॉ. सिंह पोस्ट ग्रेजुएट मेडिकल डॉक्टर तथा आईआईएम से गोल्ड मेडलिस्ट होने के साथ एलएलबी भी कर चुके हैं।

प्रो. कनिका बनी साइंस कॉलेज की डीन

उदयपुर। सुविवि के विज्ञान महाविद्यालय के अधिष्ठाता पद पर प्रो. कनिका शर्मा ने पदभार ग्रहण किया है। कुलपति प्रो. अमेरिका सिंह ने उन्हें अधिष्ठाता नियुक्त करने का आदेश जारी किया। प्रो. शर्मा नैक की सदस्य भी हैं, जिन्होंने भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों को नैक ग्रेडिंग के मूल्यांकन का कार्य किया।

सक्का की कृतियां इण्डिया बुक में दर्ज

उदयपुर। शिल्पकार इकबाल सक्का द्वारा स्वर्ण निर्मित सूक्ष्मतम कलाकृतियां इण्डिया बुक में दर्ज की गई हैं। सक्का के अनुसार 10 मिलीग्राम सोने से निर्मित इन कलाकृतियों में क्रिकेट वर्ल्डकप ट्रॉफी, क्रिकेट बेट व बॉल की कृति को इण्डिया बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड 2020 के संस्करण में दर्ज किया गया है।

साहू को-ऑर्डिनेटर नियुक्त

उदयपुर। फेडरेशन ऑफ स्वीट्स एण्ड नमकीन मेन्युफेक्चरर इंडिया के अध्यक्ष वीरेन्द्र जैन ने सुखलाल साहू को फेडरेशन का राजस्थान कॉर्डिनेटर नियुक्त किया है।

भाणावत सम्मानित

उदयपुर। मेवाड़ फिलैटली सोसायटी के संस्थापक अध्यक्ष विनय भाणावत को कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय, भारत सरकार के प्रशिक्षण महानिदेशालय ने सम्मानित किया है। भाणावत का उक्त सम्मान भारतीय करेंसी नोटों का संग्रह कर पचास से अधिक बार वर्ल्ड रिकॉर्ड अपने नाम दर्ज कराने पर किया गया है। कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय से प्राप्त प्रमाण-पत्र उदयपुर रेंज की पुलिस महानिरीक्षक बिनिता ठाकुर ने भाणावत को प्रदान किया।

कृत्रिम अंग पाकर प्रसन्न हुए दिव्यांग

उदयपुर। दिव्यांग सशक्तीकरण विभाग, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार के सहयोग से नारायण सेवा संस्थान के तत्वावधान में केन्द्र की एडिप योजना में 4 व 11 सितम्बर को दिव्यांगजन को कृत्रिम अंग व सहायक उपकरण वितरित किए गए। संस्थान अध्यक्ष प्रशान्त अग्रवाल ने बताया कि सेवा तीर्थ बड़ी में सम्पन्न प्रथम शिविर के मुख्य अतिथि देवस्थान विभाग के अतिरिक्त आयुक्त ओम प्रकाश जैन व विशिष्ट अतिथि सामाजिक न्याय व अधिकारिता विभाग के उपनिदेशक मान्धाता सिंह व लोयरा पंचायत की सरपंच प्रियंका सुथार थे। अध्यक्षता जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव व अतिरिक्त जिला न्यायाधीश रिद्धिमा शर्मा ने की। जबकि द्वितीय शिविर के मुख्य अतिथि बड़गांव पं. समिति के विकास अधिकारी जितेन्द्र सिंह सांदू थे। संस्थान संस्थापक पद्मश्री कैलाश मानव ने अतिथियों का स्वागत किया। डॉ. मानस रंजन साहू ने दिव्यांगों को केलिपर्स व कृत्रिम अंग पहनाए जबकि अतिथियों ने व्हीलचेयर, ट्राईसाइकिल वॉकर, वैशाखी आदि का वितरण किया। इस अवसर पर विष्णु शर्मा हितैषी,

भगवान प्रसाद गौड़, अनिल आचार्य भी उपस्थित थे। संचालन ऐश्वर्य त्रिवेदी ने व धन्यवाद ज्ञापन दक्षा राम पटेल ने किया।

हिन्दी लाओ - देश बचाओ समारोह

नाथद्वारा। पिछले सात दशकों से हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनवाने को दृढ़ संकल्पित संस्थान साहित्य-मण्डल, नाथद्वारा के तत्वावधान में प्रतिवर्ष होने वाला 'हिन्दी लाओ-देश बचाओ' समारोह इस वर्ष कोविड 2019 की महामारी की गाइडलाइन का अनुपालन करते हुए 14 सितम्बर को आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत युवा कवि गौरव पालीवाल की सरस्वती व श्रीनाथजी की वंदना एवं निशांत कृष्ण शर्मा की गणपति वंदना से हुई। इस महत्वपूर्ण आयोजन में साहित्य-मण्डल के प्रधानमंत्री श्याम प्रकाश देवपुरा ने केन्द्र एवं देशभर की राज्य सरकारों से आग्रह किया कि 70 वर्षों से उपेक्षित माँ भारती को राष्ट्रभाषा पद पर अविलंब प्रतिष्ठापित कर देशभर के हिन्दी प्रेमियों को उपकृत करें। त्रैमासिक पत्रिका 'हरसिंगार' के सद्य प्रकाशित अंक विमोचन भी किया गया। इस दौरान रघुनाथ कुम्हार, प्रद्युम्न देवपुरा, ललिता देवपुरा, रानी सोनी, अनिरुद्ध देवपुरा, राकेश वर्मा, प्रियंका देवपुरा, मोनिका वसीटा, प्रवीणा जोशी, हिमानी विजयवर्गीय, कोमल वसीटा आदि उपस्थित थे।

दधीचि जयंती प्रतियोगिताएं

उदयपुर। महर्षि दधीचि सेवा संस्थान की ओर से महर्षि दधीचि की जयंती पर विभिन्न वर्चुअल प्रतियोगिताएं हुई। इस अवसर पर हिरणमगरी सेक्टर-4 स्थित संस्थान परिसर में समाज के 21 युवाओं ने रक्तदान किया। समाज के अध्यक्ष सुधीर जोशी ने बताया कि दाधीच समाज को एकसूत्र में बांधने के उद्देश्य से वेबसाइट का निर्माण भी किया गया है, जिसका उद्घाटन मनोहर शंकर दाधीच एवं दीपक व्यास ने किया।

Mahendra Singhvi
Director

GSTIN : 08AFBPS9355Q1ZH

KANAK
CORPORATION

General Merchant & Commission Agent

337, 338, 3rd Floor, Samridhi Complex,
Opp. Main Gate Krishi Upaj Mandi, Udaipur (Raj.)
Ph. : 0294 2482911 to 16 Mo.: 93528 55555
Email: vpsinghvi@gmail.com

संवेदना

उदयपुर। राजस्थानी व हिन्दी के जाने-माने लेखक-कवि श्री हरमन जी चौहान(78) का 8 सितम्बरको स्वर्गवास हो गया। वे हिन्दुस्तान जिंक लि. से राजभाषा अधिकारी के पद से सेवानिवृत हुए। उन्होंने सेवानिवृत्ति के बाद कुछ समय 'प्रत्यूष' के सम्पादकीय विभाग को भी अपनी सेवाएं दी। वे अपने पीछे व्यथित हृदय माता हीरादेवी, पत्नी श्रीमती भागवत कंवर, पुत्र निखिलेश सिंह, पुत्रियां अर्चना, मधुलिका व तनुलिका सिंह सहित भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। युगधारा साहित्यिक संस्था के पूर्व अध्यक्ष श्री लालदास 'पर्जन्य' का 1 सितम्बर को आकस्मिक निधन हो गया। उनके निधन पर साहित्य जगत ने गहरा शोक व्यक्त किया। वे अपने पीछे शोकाकुल पुत्र ऋषिकेश व पुत्री सुमित्रा, तृप्ति व मनीषा सहित पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं। उनके निधन पर डॉ. ज्योति पुंज, खुर्शीद नवाब, शिवदान सिंह जोलावास, तरूण कुमार दाधीच, रामदयाल मेहरा, रेणु देवपुरा, जगदीश तिवारी, पुरूषोत्तम 'पल्लव' ने गहरा शोक व्यक्त किया। 'प्रत्यूष' पत्रिका के प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी ने उन्हें आम आदमी की पीड़ा को अभिव्यक्ति देने वाला कवि बताया।

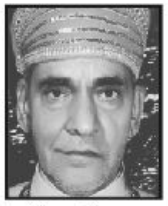

उदयपुर। श्री जगन्नाथ जी सोनी का 31 अगस्त को असामयिक निधन हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय धर्मपत्नी श्रीमती धापु बाई सोनी, पुत्र ललित, श्यामसुंदर, भगवान लाल, पुत्री कंचन देवी एवं पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों का समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री मगनलाल जी बालदी (बालदी एण्ड एसोसिएट्स सीए) का 23 अगस्त को आकस्मिक देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पत्नी श्रीमती शांति देवी, पुत्रवधू राधा स्व. आनन्दीलाल, पुत्र अशोक कुमार, पवन कुमार व चन्द्रप्रकाश सहित पौत्र-पौत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

ऋषभदेव। श्री कानजी पटेल सुपुत्र सवजी पटेल, निवासी थाणा (केशरियाजी) का 14 अगस्त को निधन हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय धर्मपत्नी श्रीमती चुन्नी देवी, पुत्र मोहनलाल, रमणलाल, लक्ष्मीलाल व राजेन्द्र कुमार, पुत्रियां रतनदेवी, अंजु, कमला, मंजू देवी सहित पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों का समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री तेजपाल जी मंगरोरा(बिट्टुलेश मसाला) का 20 अगस्त को स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे श्रद्धावनत धर्मपत्नी श्रीमती नंदू देवी, पुत्रवधू राजकुमारी(स्व. शांतिलाल), राजेन्द्र व वीरेन्द्र तथा पुत्री सुनीता महावर सहित पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों का विशाल परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। पीएचईडी के पूर्व सहायक प्रशासनिक अधिकारी श्री अनिल जी कपूर का 19 अगस्त 2020 को निधन हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पत्नी श्रीमती कामिनी कपूर, पुत्र अक्षय कपूर, पुत्रियां शिखाआनंद, नेहा सेठी, सलोनी, संजू सहित भाई-भतीजों का विशाल परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। सेन्ट्रल बोर्ड ऑफ दाऊदी बोहरा कम्युनिटी के पूर्व चेयरमैन एवं समाजसेवी श्री गुलाम हुसैन जी फैज़ी का 3 सितम्बर को इन्तकाल हो गया। वे 90 वर्ष के थे। 1973 से 1998 तक वे बोहरा सुधारवादी आन्दोलन के मार्गदर्शक रहे। वे अपने पीछे पुत्र मुमताज फैजी, यूनुस फैजी, पुत्री बानु सैफी, पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों का समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं। उनके निधन पर बोहरा यूथ व सुधारवादी तबके के नेताओं ने श्रद्धांजलि अर्पित की है।

उदयपुर। श्री नरेश कोठारी (50) (बॉम्बे इलेक्ट्रिकल्स) का 25 अगस्त को असामयिक देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पिता देवीलाल कोठारी, माता पानी बाई, पत्नी श्रीमती पद्मा, पुत्र ध्रुव व मीत सहित भाई-भतीजों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्रीमती कमला देवी जी चपलोत धर्मपत्नी श्री प्यारेलाल जी चपलोत का 5 सितम्बर को आकस्मिक देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पति, पुत्र सुरेश, पुत्रियां अरूणा, रेखा व संगीता तथा पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों का सम्पन्न एवं समृद्ध परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। श्रीमती चन्द्रकांता जी धर्मपत्नी श्री भूरालाल जी भदावत का 8 सितम्बर को हृदयाघात से देवलोकगमन हो गया। वे 70 वर्ष की थीं। वे अपने पीछे व्यथित हृदय पति, पुत्र प्रमोद, डॉ. लोकेश व अक्षय जैन तथा पुत्री इन्दु सिंघवी व पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों तथा भाई-भतीजों का विशाल परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। मानपुरा-लखावली निवासी श्री भीमा जी डांगी का 7 सितम्बर को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय पत्नी श्रीमती लोगरी बाई, लीलाबाई, पुत्र प्रेम, विजय व पुत्रियां पुष्पा, लेहरी देवी व गंगा देवी तथा उनका भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री मनोज जी साहू पुत्र स्व. रोशन साहू पूर्व पार्षद का 15 सितम्बर 2020 को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे शोकग्रस्त माता पुष्पा देवी, पत्नी श्रीमती भावना एवं भाई-भतीजों का विशाल परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री प्रतापलाल जी नैनाणी (विजेता नमकीन) का 13 सितम्बर को आकस्मिक देहावसान हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय धर्मपत्नी श्रीमती लक्ष्मी देवी, पुत्र अजय और धीरज नैनाणी, पुत्रियां विनीता, दीपा एवं पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों का विशाल परिवार छोड़ गए हैं।

econnect

Wish You a Happy Navratri

E connect Solutions FZC

G-18-19-20, IT Park
I.T. Park, U.I.T. Colony
Madari Industrial Area, Udaipur
Mobile : +91 98290-40300
Phone : 0294-2410370, 2418610

Wish You a Happy Navratri

Dhanesh Baid

ABS CONSTRUCTIONS

ABS CONSTRUCTIONS

G-9 Shree Niketan, 380, Ashok Nagar, Udaipur-313001
Phone : 0294-2411812, Mobile : 99508-11111
E-mail : abs1.udaipur@gmail.com

Wish You a Happy Navratri

Jai Shanker Rai
Director

Ganpati
Infravision Pvt. Ltd.

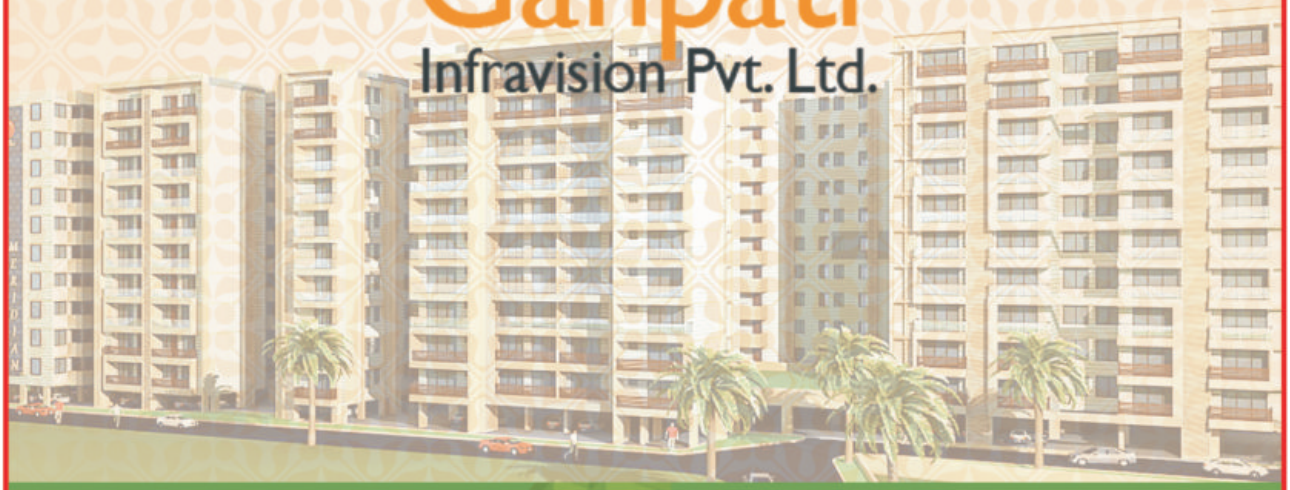

प्रधान मंत्री
आवास योजना-शहरी
Pradhan Mantri Awas Yojana-Urban

मुख्यमंत्री
जन आवास योजना-2015
EWS एवं LIG हाउसिंग पर क्रेडिट
(राजस्थान के शहरी क्षेत्रों के लिए)

RERA APPROVED
REG. NO.: RAJ/P/2018/850

GANPATI GREENS

SHREE GANPATI AFFORDABLE HOMES LLP

AFFORDABLE HOUSING AT UDAIPUR

www.ganpatihousing.com

203, 2nd Floor, Doctor's House Complex,
Post & Telegraph street, Madhuban, Udaipur (Rajasthan)
Tel/Fax: 0294-2429118, E-mail: gipl.udaipur@rediffmail.com

Radhey Shyam Sikhwal
Director
94142 35249, 76650 49666

Rajdhani

RAJDHANI ENGINEERING SOLUTIONS

Authorised Assembler

We Supply Hydraulic Hose Assembly by part no. for TATA, Volvo, Komatsu, Atlas Copco, BEML, L&T, JCB, Kobelco, Poclain, Caterpillar, TATA Hitachi

*All major kits available for Earthmoving Machinery available by part no.

N.H.8, Main Road, Bhuwana, Udaipur - 313 004 (Raj.)
Ph. : 0294-2440538 (O), 2441209 (O&R), Email : rajdhaniudaipur@gmail.com

Sister Concern : GOURAV ENGINEERING SOLUTIONS, MADRAS TRADERS

Rajasthan State Mines and Minerals Limited

(A Premier PSU of Government of Rajasthan)

CIN U14109RJ1949SGC000505
GSTIN 08AAACR7857H1Z0

Mining Prosperity from Beneath the Surface

OUR PRODUCTS

Rock Phosphate

- + 30% P_2O_5 Crushed Chips (-12mm size)
- + 31.5% P_2O_5 Crushed Chips (-12mm size)
- + 31.54% P_2O_5 Beneficiated Concentrate (200 mesh size)
- + 18% P_2O_5 Powder (RAJPHOS) An Organic Direct Application Fertilizer

Lignite

- Lignite with calorific value of 2800-3200 Kcal/Kg.
- GOI has allotted Lignite blocks having reserve of more than 400 million tons

Gypsum

- Run Of Mine (ROM) Gypsum-used in Cement industries and land reclamation
- Run of Mine (ROM) Selenite- used for manufacture of Plaster of Paris & Ceramics

Limestone

- +95% $CaCO_3$ Low Silica<1.5%, Steel Melting Shop (SMS) grade Limestone

Power

- 106.3 MW capacity Wind Energy Project in operation, with generating capacity of 1650 Lac KWH (units) grid quality clean power per year.
- Projects registered under CDM, UNFCCC (Kyoto Protocol) for CERs earnings.
- 5 MW Solar project also in operation at Gajner, Bikaner

Industrial Beneficiation Plant, Jhamar Kotra

Panoramic View of Giral Lignite Mines, Barmer

Ariel View of Solar Plant at Bikaner

Limestone Crushing Plant at Sanu Mines, Jaisalmer

Wind Energy Farm at Bada Bagh, Jaisalmer

OUR STRENGTHS

- Consolidating leadership in Fertilizer, Steel, Cement, and Power Sector.
- One of the Biggest Revenue Contributing PSU to state exchequer.
- Only Producer of SMS grade Limestone & largest producer of natural Gypsum & High Grade Rock Phosphate in the country.
- Achieved unprecedented growth in Productivity, Turnover, Revenue and Commanding Share in Industrial Mineral Sector of India.
- Established rare distinction of being the first PSU in India to earn foreign exchange by successfully trading Carbon Credit in International Market.
- Taking care for society under CSR. Contribution for Health & Medical, Education, Water Supply, Infrastructure and Community Development, Environment Protection and Plantation in Project Districts.

OUR PROJECTS

Petroleum & Natural Gas

- Wholly owned subsidiary company formed in the name of Rajasthan State Petroleum Corporation Limited for carrying out activities in Petroleum & Natural Gas Sector in Rajasthan.
- A joint venture Company in the name of Rajasthan State Gas Limited with joint venture partner GAIL Gas Ltd has been incorporated for developing City Gas Distribution network in Rajasthan.

Venture to mine out Lignite & Sand

- A joint venture company M/s Barmer Lignite Mining Company Limited has been incorporated with joint venture partner Rajwest Power Limited wherein RSMML hold 51% equity.
- A newly formed strategic business unit has been established to explore business opportunities in sand.

CORPORATE OFFICE

4, Meera Marg, Udaipur - 313 004, Tel. : +91-294-2428763-67, Fax : +91-294-2428770, 2428739, e-mail: info.rsmml@rajasthan.gov.in

REGISTERED OFFICE

C-89/90, Janpath, Lal Kothi Scheme, Jaipur - 302 015, Tel. : 0141-2743734, Fax : 0141-2743735

Visit us at www. rsmm. com